ॐ श्रीहरिः ।

ललनोद्वाहपद्यावली

अर्थात् ललनसागरका छब्बीसवां भाग ।

जिसको

फ़र्रुख़ाबाद निवासी ठुमरीबनायक पं० ललन-
पिया ने भक्तमनोरञ्जनार्थ ललित व सरल
भाषा के शब्दों में विरचित किया ।

प्रथमबार

लखनऊ

बाबू मनोहरलाल भार्गव, बी. ए., सुपरिंटेंडेंट के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के यन्त्रालय में छपा

सन् १९१५ ई०

हक़ तसनीफ़ महफ़ूज़ है बहक़ नवलकिशोर प्रेस ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीहरिः ॥

ललनोद्वाहपद्यावली ॥

मंगलाचरण ॥

दोहा ॥

जय जय जय शंकर ललन, सुरन अग्रणिय देव ॥
क्षेम कुशल मुद सुमति गृह, द्रविय नाथ तजि भेव ॥ १ ॥
नमो शारदा पद्मपद, संयुत हित चित प्रेम ॥
जननि ललन पहँ रीझिये, जन प्रणपालिनि नेम॥ २ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश वपु, परब्रह्म अनुरूप ॥
बार बार विनवौं सो गुरु, दया मया को रूप ॥ ३ ॥
नन्दललन वृषभानुजा, इष्टदेव मम दोउ ॥
पूरण हो मनकामना, जो सहाय तुम होउ ॥ ४ ॥
कवि कोविद गन्धर्व गुनि, सुर मुनि करहुँ प्रणाम॥
ललन सरिस मुहिं समुझिहिय, करियो दयाभिराम ॥ ५ ॥

गणेशमंगल ॥ १ ॥

श्रीगणपति सुखसदन प्रथम तिन्ह ध्याइये ॥ क्षेमसे हों कुल काज मनोर्थ पुराइये ॥ १ ॥ (अन्तरा) ऋद्धि सिद्धि नवनिद्धि के दाता गणपती ॥ तिन्ह सुमिरे ततकाल सबै सुख पाइये ॥ २॥ सुमति सुयश की खानि सुबुधि विद्यापती ॥ तिनके चरण सरोजनु आदि मनाइये ॥ ३ ॥ लम्बोदर भुज चार अभय वरदा सदा ॥ मस्तक बालमयङ्क मुनिन मन भाइये ॥ ४ ॥ शंकर ललन लड़ैते पार्वती प्राणप्रिय ॥ पूर्ण करैं रुचि आश तिन के गुण गाइये ॥५ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सरस्वतीमंगल ॥ २ ॥

मात सरस्वति सुमिरुँ सदा सुखदायनी ॥ मंगलमूर्त्ति महान कुशल उपजायनी ॥ १ ॥ (अन्तरा) वीणा पुस्तक हाथ माथ केशर तिलक ॥ हंसवाहिनी उत्तम ज्ञान प्रदायनी ॥ २ ॥ विमलाननी सदैव वरै मन कामना ॥ शुद्ध बुद्धि दातार सुयश जग छायनी ॥ ३ ॥ ललनि ललन के कार्य प्रथम शुभ व्याह में ॥ ध्याइये शारद उमा रमा इन्द्रायनी ॥ ४ ॥

कृष्णमंगल ॥ ३ ॥

फूली है बाग़ बहार सुख उपजाइये ॥ उमगाय प्रेम सुप्रीति मंगल गाइये ॥ १ ॥ (अन्तरा) नृप भीष्मक कुण्डिनपती ज्यहि की रानी प्रभा ॥ पांच कुँवर ज्यहि जाये सुछवि समुदाइये ॥ २ ॥ नृप मख तनया के हेतु कियो नारद मते ॥ जाई रुक्मिणि सी सुता धन्य पुण्याइये ॥ ३ ॥ भइ पांच बरस की कुँवरि मातु मुनि सिखदई ॥ जप द्वादशाक्षरी मंत्र गौरजा ध्याइये ॥ ४ ॥ जो होय भवानी मगन लगन तोरी निरखि ॥ तौ मन भायो वर देहि यह निश्चय लाइये ॥ ५ ॥ पूजै गौरी गौर सगौर जाप हरि हित जपै ॥ षोड़श विधि पूजन साज सँजोय अथाइये ॥ ६ ॥ यक दिन मुनि आये पूज कही भीष्मकत्रिया ॥ क्यहि सँग धी व्याहूं अपन नाथ बतलाइये ॥ ७ ॥ धी रूप शील गुण सिन्धु तुम्हारी जैस नृप ॥ यह सम वर श्रीगोपाल न ढूंढ़े पाइये ॥ ८ ॥ मुनि नारद वचन प्रसन्न तीर परोसि कहि ॥ प्रभु पूर्णब्रह्म अवतारी तिन्हैं अँगाइये ॥ ९ ॥ लखि बाबुल मतो रिसाय भाय रुकमी भन्यो ॥ मैं बहिन न कृष्णै देहुँ यह भरम भुलाइये ॥ १० ॥ वह कारो कमरिया कारी लकु-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टियाधारी। नहिं वह लायक मम भग्नि न वाहि नताइये ॥ ११ ॥
भइ काग हंस शशि राहु धेनु खर जोड़िहू ॥ सुख चहों तो
रुक्मिणि शिशुपाला सँग ब्याहिये ॥ १२ ॥ नहिं मनहुँ जो मेरी
बात तो बाबुल जानु जहँ ॥ मैं मरूं तुम्हें मारूँ कुलदेहुँ नशा-
इये ॥ १३ ॥ बड़भाय कहै शिशुपाल गुपालै नहिं बरूं ॥ प्रभु
देन कहैं पितु माय भाय भौजाइये ॥ १४ ॥ बुलयो भैय।
शिशुपाल लगन त्यहि भेजदइ ॥ तब रुक्मिणि श्रीहरि ध्यायो
होहु सहाइये ॥ १५ ॥ लिख आरत वचन गुपालै पतिया द्विज
दई ॥ दै खर्च वेगि कहि विप्र द्वारिका धाइये ॥ १६ ॥ तुव गौ
गरीबनी घेर लई गण केहरी ॥ जन जिया कुशल चहो
वेगहि कुँडिन सिधाइये ॥ १७ ॥ यकदिन विवाह आगे उमा मठ
पुरविहय ॥ सँग सखिन पूजन जैहौं हां चलि आइये ॥ १८ ॥
छल बल न करिये कछु न सँग दल लाइये ॥ शरणागतहि को
आनि तहँ अपनाइये ॥ १९ ॥ हौं लिखित किंचित जानि बहुतिक
दुखित मुहि ॥ अपनी कृपा की बानि मत विसराइये ॥ २० ॥
द्विज दई पतिया श्याम छतियां पुलक भईं ॥ लागि नैन झर
नहिं आंक परत सुझाइये ॥ २१ ॥ दमुसुत बरात आई इतै पुर
अनमनो ॥ गिरि लाड़ो खाय पछाड़ न श्वास समाइये ॥ २२ ॥
भइ जन्म वैरिनि मोर मैया मोहिंको ॥ अब पालि मोसी सुरभि देत
कसाइये ॥ २३ ॥ गर घोटि किन दियो जन्मते जननी जनक ॥
बन गुंजा भख धौं देती गर्भ बहाइये ॥ २४ ॥ चढ़वायो रुक्मी हुक्मी
तैल बराजोरी ॥ कहि पुजै उमा शिशुपाल सँग भमराइये ॥ २५ ॥
उत हरि बरात आई उमा मठ तट बसी ॥ रुक्मिणी मेटो ताप हिय
हुलसाइये ॥ २६ ॥ सँग सखिन सज लाड़ो उमा परछन गई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बर दीन्ह अंबे जाय कृष्ण मिताइये ॥ २७ ॥ प्रभु आनि रिपु दल हानि सोइ रुक्मिणि हरी ॥ ब्याही नृपति प्रभु संग बजहिं बधाइये ॥ २८ ॥ धनि रुक्मिणी बड़भाग वर मोहन मिलै ॥ हो ललनवन्ति अनन्त सुखन हनाइये ॥ २९ ॥ हो पिहर ससुरा सुफल तुहि लाड़ो सदा ॥ लहि धाम ग्राम गुलाम दाम अघाइये ॥ ३० ॥ रहे अचल भाग सुहाग तेरो सरबदा ॥ मंशा सनाथैं तोर सब मन भाइये ॥ ३१ ॥ नँदललन की तुम नित रहो प्राननप्रिया ॥ प्रिय प्राण धन तुव रहैं नेह निभाइये ॥ ३२ ॥

राममंगल ॥ ४ ॥

श्रीराम लषन मुनीश विश्वामित्र लय आये बना ॥ तिन्ह यज्ञ की रक्षा करी वसु षट सहस खल दल हना ॥ १ ॥ नृप जनक ओर ते सियस्वयंवर में ये दारुण प्रण ठना ॥ धनु दरै सीता वरै सो तहँ जुरो नृपगण अनगना ॥ २ ॥ तहँ नृप बालकन सहित आये बांधि मुनि कटि कंधना ॥ चन्दा सुरज सी ज्योति दीपै दुहू भ्रातन के तना ॥ ३ ॥ गे पुष्प तोरन काज श्रीमिथिलेश केरे बागना ॥ लखि जनकजा मोहित भई गइ बिसर अम्बा परछना ॥ ४ ॥ नृप सादरै मुनि राम लछनै लाये जहँ धनु-थापना ॥ नहिं शिवशरासन उठो हारे अमित बलि भट रावना ॥ ५ ॥ गुरु मांग आयसु उठे तब रघुवर कियो धनु भंजना ॥ पहिराइ सिय जयमाल प्रभुगल सकल जन जय जय भना ॥ ६ ॥ मिथिलेश पाती दइ दशरथै मम विनय यह बंचना ॥ लैये बरात हमार पुर तुव तनय मुहि धी अर्पना ॥ ७ ॥ सुनि सठि सँदेश प्रसन्नदशरथ साजि बरातिन दल घना ॥ आये जनकपुर ब्याहने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को आपने दोउ लालना ॥ ८ ॥ कंचन मणिन मँडपा विरचि सज ध्वज पताका तोरना ॥ मोतियन चौक पुराय मलयागिरि के पटाप्रमोहना ॥ ९ ॥ बहु हीर कणियां मणियां लड़ियां भूमैं भुम्पा-युत बना ॥ द्युति दिपैं भाड़ भबा फनूस गिलास हाड़िन दी-पना ॥ १० ॥ तर वेदिका बुलवाय बाबुल जननि दुलहिन दूल्हना॥ पुजवाय गौरि गणेश बुध कुलपूज्य देवी देवना ॥ ११ ॥ दइ दान दूल्हापाणि सुता सरत्न आभूषण धना ॥ बाजैं बधावे वह घरी लें भामरी बनरी बना ॥ १२ ॥ कुलनारि सोहिल गारि गावैं लै लै नामनुसाजना ॥ धूंधार बजैं नगार नौबत तोरही वच रस सना ॥ १३ ॥ नाइया नेगी भे अयाचक पाय ब्राह्मण दक्षिना ॥ विरचैं विमल कुल वृद्धि मागध सूत बन्दी चारना ॥ १४ ॥ कुल रीति प्रीति सनीति कै समधोर समविन बन्दना ॥ सहधूम ब्याहे चारि सुत नृप जनक केरे आंगना ॥ १५ ॥ लै वधुन बिदा कराय दशरथ गये निजपुर पावना ॥ प्रिय ललन बहुन समेत परछे भुवन जननि जनक जना ॥ १६ ॥

सुहागमंगल ॥ ५ ॥

रुक्मिनि संग सखिन लै स्यानी जा अम्बा ढिग विनय बखानी । जै जै जै शंकर पटरानी भाग सुहाग दे महरानी ॥ (अन्तरा) पांच वर्ष की उमरसे ध्याया, अबतो अम्बे करिये दाया । दीजे मुहिंका पति यदुराया, दामोदर दरपानी ॥ भाग सुहाग दे महरानी ॥ १ ॥ रुक्मिणि संग सखिन लै स्यानी, जा गंगा की विनय बखानी। जै जै भागीरथि वरदानी, भाग सुहाग दे महरानी ॥ जो तुम्हरी शरणागत आवै, मनोकामना सो भरपावै । सुख सुत संपति से घर छावै, होय कबहुँ नहिं हानी ॥ भाग सुहाग दे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

महरानी ॥ २ ॥ रुक्मिनि संग सखिन लै स्यानी, सूर्य्यनरायण विनय बखानी। जै जै दिनेश प्रिय जगप्रानी, भाग सुहाग दे सुखदानी ॥ हे जगजीवन अन्न धन दाता, तिमिर हरण दृग दृष्टिविधाता। नमो नमो तुव पद जलजाता, कृपा तोर कल्यानी ॥ भाग सुहाग दे सुखदानी ॥ ३ ॥ रुक्मिनि संग सखिन लै स्यानी, सरस्वति ढिग जा विनय बखानी। जै जै जै शारदा भवानी, भाग सुहाग दे राजरानी ॥ तुम सेवा शुभमती प्रदाई, ज्ञान बुद्धि दाई अधिकाई। सदा दास दाहिनी सुहाई, वेद पुराणन भानी ॥ भाग सुहाग दे राजरानी ॥ ४ ॥ रुक्मिनि संग सखिन लै स्यानी, जा गणपति ढिग विनय बखानी। जै जै सिद्धि सदन बुधिवानी, भाग सुहाग दे हितमानी ॥ प्रथम तुम्हारा धरै जो ध्याना, चहै जो हो कारज मनमाना। हे मङ्गलमूरति भगवाना, सर्व गुनन की खानी ॥ भाग सुहाग दे हितमानी ॥ ५ ॥ रुक्मिनि संग सखिन लै स्यानी, जा शिव समीप विनय बखानी। जै जै शंकरपती मृडानी, भाग सुहाग दीजे ज्ञानी ॥ शिवजी दीजै पति वनवारी, गिरिवरधारी कृष्णमुरारी। श्रीवरवृन्दाविपिनविहारी, जै शिवधारी भस्म मशानी ॥ भाग सुहाग दीजे ज्ञानी ॥ ६ ॥ रुक्मिनि संग सखिन लै स्यानी, गुरु नारद प्रति विनय बखानी। जै विधि ललन प्रपूरण ध्यानी, भाग सुहाग दे सम्मानी ॥ यशोमति ललन के तुम गुण गाय, मातु पितु मन को लियो लुभाय। दीजै नँदनन्दन मुझे मिलाय, रहै जग तुम्हरी सुयश कहानी ॥ भाग सुहाग दे सम्मानी ॥ ७ ॥

शकुनमंगल ॥ ६ ॥

चिरजीवो तोरी लाडिली श्रीवृषभान। जौलौं गंग यमुन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जलधरणी ध्रुवतारो शशि भान ॥ (अन्तरा) अजर अमर गिरि-वरधर नटवर, रहें बरसाने दोउ हिलमिल कर। नवलकिशोर अवस्था तन धर, विहरैं विविधविधान ॥ १ ॥ अचल सुहाग भाग नित राजैं, श्रीवृन्दावनकुंज विराजैं। विमल बधावे बाजे बाजैं, गाजैं गगन निशान ॥ २ ॥ आँगन डोलैं मृदु मुख बोलैं, गद् गद् रसभरी बतियां छोलैं। मोहैं नन्दललन बिन मोलैं, रसिक जनन सुखदान ॥ ३ ॥

शकुनमंङ्गल ॥ ७ ॥

बड़ भागिनि तोरी धनि धनि राजदुलारी ॥ (अन्तरा) धनि मैया की कोखि सुहाई, जो ऐसी सुन्दर धी जाई। फूलै फलै भाग फुलवाई, हो सुहाग सुखवारी ॥ १ ॥ धन्य वीर बाबुल की क-रनी, धी पाई कुलतारनतरनी। कीरति विमल अकीरति हरनी, आनँदरूप अपारी ॥ २ ॥ धनि बनरी का भाग सुहाया, नन्द-ललन जैसा वर पाया। विधिना ने भल जोड़ मिलाया, बनाबनी परवारी ॥ ३ ॥

सोहिलमंगल ॥ ८ ॥

मुहि नन्दामहरसुत मोहिला रे मन मोहिला मोहिला मो-हिला महरसुत मोहिला रे ॥ (अन्तरा) सांवरी सुरतिया वारो। पट पीत सुभग तनुधारो ॥ मदन छवि सोहिला रे ॥ १ ॥ मोहिनी सुरतिया मानो। जादू टोना चितवन जानो ॥ अजब ढँग ओ-हिला रे ॥ २ ॥ कोइ टीको भाल हरि देवैं। कोइ लेय गोद पद सेवैं ॥ मगन तज द्रोहिला रे ॥ ३ ॥ लखि पती रमा रमणीया। उर लै हुलसानी प्रीया ॥ न कोउ जह जोहिला रे ॥ ४ ॥ लखि भाव

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उमा मुसक्यानी । प्रिया ललन मनहिं सन्मानी ॥ मचो ब्रज सोहिला रे ॥ ५ ॥

सोहिलमंगल ॥ ९ ॥

धनि नन्दामहरसुत साँवला रे । सुठि सांवला सांवला सांवला महरसुत साँवला रे ॥ (अन्तरा) धनि धनि आठों पटरानी । वर भाग सुहाग सुहानी ॥ हरी पति पाँवला रे ॥ १ ॥ धनि जाम्बवती सतभामा । सत्या कालिन्दी वामा ॥ भरी चितचाँवला रे ॥ २ ॥ लक्ष्मणा ललाम सुभागी । भद्रा हरिपद अनुरागी ॥ सुयश श्रुति छाँवला रे ॥ ३ ॥ धनि मित्रविन्दया प्यारी । मनमोहन राजदुलारी ॥ सुहाग सुहाँवला रे ॥ ४ ॥ धनि धनि यह द्वारा नगरी । जहँ श्रीप्रभु आनँदघनरी ॥ निवास निभाँवला रे ॥ ५ ॥ धनि धनि यह समय सुखारी । सुर करत सकल मनुहारी ॥ सुमन झर लाँवला रे ॥ ६ ॥ धनि धनि हम सबके भागा । नँदललन चरण चितलागा ॥ सुभग दिन आँवला रे ॥ ७ ॥

संदेशमंगल ॥ १० ॥

(श्रीरुक्मिणीजीकी पाती)

भइ लिखत पाती प्रेम पूरित दृगनसों लागी झरी ॥ कर कँपत लेखनि पड़त गिर गिर हुच हुचिन बँधगइ लरी ॥ १ ॥ सिद्धिश्री ब्रजराज मम शिरताज धर्मशिरोमनी ॥ जय जयति जय गोपाल गोविंद गिरिधरे यादो धनी ॥ २ ॥ जनवश्य प्रबल प्रताप तापन तापहारी हे हरे ॥ तव चरण शरण प्रणाम जै जै जन यशद सुख सागरे ॥ ३ ॥ हो दीन दयालु कृपालु मुँहिका चरण चेरी जानिये ॥ तुम सकल घट घट केर ज्ञाता कहा लिखि तुहि मानिये ॥ ४ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ज्यहि दिनते द्वादश अक्षरी गुरुमंत्र तुम हित मुहिं दियो ॥ मन वचसों क्रमसों तबसों पति मैं मान प्रभु तुम कहँ लियो ॥ ५ ॥ मम भ्रात मातरु तात निदर बुलाय शिशुपालै भनो ॥ गृह रुक्मि रुक्मी भयो शठ मुहिं चहत असुरै अर्पनो ॥ ६ ॥ अब लाज नाथहि हाथ तोरे वेगि मोहिं उबारिये ॥ प्रणपाल वत्सल भक्त स्वामी दया तन उर धारिये ॥ ७ ॥ भइ विरह दारुण दाह अब तुम बिन न कोउ मोरा हरी ॥ तुव चेरि सिंहिनि को शृगालन घेरि हे नरकेहरी ॥ ८ ॥ ताजि गहर बेगि पधारिये नहिं प्राण प्रभु मम जायँगे ॥ जो देर करि नँदलाल तो जग लोग मोंहि हँसायँगे ॥ ९ ॥ बिन तोर मोर न कोउ सहायक यह समय व्रजनाथ रे ॥ ले किंकरी को उबार प्रिय लखि पूर्व जन्मिक साथ रे ॥ १० ॥ घटघटविलासी सबन के तुमसों न प्रभु किञ्चित दुरो ॥ गज द्रौपदी यमलार्जुनादिक सम उद्धारो मत पुरो ॥ ११ ॥ तुहि विरचि कहा जतायबो नहिं ललन ज्ञाता जक्त के ॥ वश इतक में लघु थोर लिखि बहुमान जो वश भक्त के ॥ १२ ॥

पत्रिविनयमंगल ॥ ११ ॥

कीजिये कृपानिधान किंकरी पै दाया। मैं मन वच क्रमसों पति तुम को अपनाया ॥ (अन्तरा) अर्पन सब कर्म धर्म सो हित मम काया ॥ कौन लाग जानि नाथ मुहिका बिसराया ॥ १ ॥ तुम तो प्रभु भक्तपाल वेदन मुनि गाया ॥ फिर तो मम बार इतक विलँब क्यों लगाया ॥ २ ॥ मम से किये अमित काज जो जन तुहि ध्याया ॥ तुमहिं जनन काज नाथ गिरहि कर उठाया ॥ ३ ॥ दलता विधि मान तुही इन्द्र मद नशाया ॥ द्रौपदी निवारण

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दुख गज के सुखदाया ॥ ४ ॥ तुम्हरोहि नँदललन बल भरोसा यदुराया ॥ दीनबन्धु जान तोहि शरण मन लगाया ॥ ५ ॥

कंकण (कँगना) मंगल ॥ १२ ॥

शिशुपाला हित मैया न बांधूं कँगना ॥ लगौ तुम कोउ मोरे सँग ना ॥ (अन्तरा) शीश न गुहूं भाल वेंदी धिक दृग न आंजूं अँजना ॥ १ ॥ मेंहदी पाणि न उबटन अँग ना जावकहू पग ना ॥ २ ॥ हा हा करत समुझाउ रुकम तुहिं एरे वीर बह्मना ॥ ३ ॥ भलो बुरो चहि कहो सकल मुहिं मो पति नँदललना ॥ ४ ॥

द्रुममंगल ॥ १३ ॥

दादरा ॥

हमारा बेगि करो निस्तारा न भारा भक्ति का निरवारा ॥ (अन्तरा) अपनी लखि क्यों नहिं अपनावत कह अपराध निहारा ॥ १ ॥ कासन कहूं मोर सुधि लीजै तुम बिन कौन सुखारा ॥ २ ॥ जन्म व्यतीत भयो दाया बिन तुम नहिं नैक बिचारा ॥ ३ ॥ ललन श्याम अब बेगि मिलावहु नहिं जिय जाय यहि बारा ॥ ४ ॥

द्रुममंगल ॥ १४ ॥

मैं तो बिनती करूं कर जोर जोर ॥ अब बेगि मिलो मुहिं नँदकिशोर ॥ तुम बिन व्याकुल जिय भयो मोर ॥ (अन्तरा) जिय दरशन अभिलाष पुजैये लगी तोर चरणन में डोर ॥ १ ॥ ललन प्रिया आधीन तिहारे करिये कृपाकटाक्ष कोर ॥ २ ॥

द्रुममंगल ॥ १५ ॥

निरखि गोरी पिया को परम हुलसी। झपट झट सैंयां डारत गल बैयां ॥ (अन्तरा) परस अँग अँग सों, निपट शुभ ढँगसों।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पकर कर करसों, सिसक सों हँसी ॥ १ ॥ करत रस बतियां, मोहिनी सी सुरतियां । मिलाये अँखियां सों, अँखियां कमलसी॥२॥ युगुल छवि छाजै, दामिनि शशिलाजै । ललनपिया प्यारी छवि, जिया में बसी ॥ ३ ॥

बनरामंगल ॥ १६ ॥

दूल्हो बनो व्रजराज सांवरिया ॥ (अन्तरा) मोहिनी मुरतियां, सोहिनी सुरतियां, शीश सोहै सूही सूही पगरिया ॥ १ ॥ हीरनदा सेहरा शिर सोंहदा कलँगी मानो चमके बिजुलिया॥२॥ अंग जरीदा जामा सोहै पटुका झालरदार केसरिया ॥ ३ ॥ रतन-जटित कर कँगन विराजै मेंहदी रचित अँगुरी में मुँदरिया॥४॥मृग दृग मीन कमलदल लोचन तिरछी चितवन सैन कटरिया ॥ ५ ॥ श्रवण सुघर मकराकृतकुंडल गोल कपोल सो नकबेसरिया ॥ ६ ॥ अँग २ अनँग सुहात सलोनो ललन ललित तन छवि सागरिया ॥७॥

बनरामंगल ॥ १७ ॥

सलोना मोरा लाड़िल लाल बना ॥ (अन्तरा) शिर चीरा मणियनदा सेहरा पटुका पुरितपना ॥ १ ॥ अँग अँग अमित अभूषण हेमिक जटित हीर रतना ॥ २ ॥ देहिं अशीस उभय कुल पुरजन चिर जिओ नँदललना ॥ ३ ॥

बन्नामंगल ॥ १८ ॥

बना मोरा जीवनप्राणबना ॥ (अन्तरा) रोम रोम पर तन मन वारूं शोभा सिन्धु घना ॥ १ ॥ शिर चीरा हीरा मणियनदा सेहरा सजितपना ॥ २ ॥ पटुका सुहा केशरिया बागा जड़ित

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जाल रतना ॥ ३ ॥ नंदललन छवि सिन्धु मनोहर व्रज जन जिवनधना ॥ ४ ॥

सेहरामंगल ॥ १९ ॥

बनरे रँगीले की मलिनियहुँ रँगीलीसी बरन बरन सजे सिंगार आई सुहाई सो सज पिटार सेहरा गुँधीले की ॥ (अन्तरा) बेला चमेली मुगरा मुतिया, करनफूल दौना मरुआ, मौरसिरी निवारी जुही केतकी जड़ीले की ॥ १ ॥ केवड़ा गुलाब गेंदरा, कदम्ब दावदी सो हरसिंहार, नइ बहारदार लड़ लसीलेकी ॥ २ ॥ शुभघड़ि शुभ सुख निहार, वारत भूप धन अपार, नंदललन चिर जियो यह जोड़ी सुखसृजीले की ॥ ३ ॥

द्रूममंगल ॥ २० ॥

दादरा ॥

दरशन देना हो व्रजराज सुत वसुदेव देवकीवाले ॥ (अन्तरा) सुनो श्रीकमलापति महराज, हमारी राखि लीजिये लाज। सुधारे सब भक्तनके काज, तुम्हारे बिन को विपता टाले ॥ १ ॥ दुशासन हैगा बड़ा कठोर, सहस दश गजका जिसमें जोर। मेरी पति जाती नन्दकिशोर, चीर उघरतसे मुझे बचाले ॥ २ ॥ सभामें बैठे हैं सब अंध, बन्द कोइ करे न इस्का मुखरंध। मौन पति हो रहे होत कुधंध, मुझे इस दुखसे कौन निकाले ॥ ३ ॥ सुनतही द्रुपदसुता की टेर, करी नहिं कुछ भी प्रभुने देर। लगाया हरि अंबर का ढेर, हुये पांडों के मुँह उजियाले ॥ ४ ॥ नँदललन ऐसे दीनदयाल, कर दिया छिनमें हमें निहाल। देवता गावैं दै दै ताल, होगये कौरव के मुख काले ॥ ५ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टूमसंगल ॥ २१ ॥

दादरा जोड़े का ॥

शिवजी होना सब पर द्याल हो काशी के रहनेवाले ॥ (अन्तरा) जटा में शोभित है श्रीगंग, भाल में चन्द्र गौरजा संग । पहिने बीछिन के भूषन अंग, कमर में लिपटे नाग हैं काले ॥ १ ॥ विभूती तनमें चढ़ी अखंड, हाथ में लिये त्रिशूल प्रचंड । दिया करते दुष्टों को दंड, भक्तकी रक्षा करनेवाले ॥ २ ॥ ब्रह्म हो सृष्टी तुम्हीं रचाय, विष्णु हो पालन करते ताहि । रुद्र हो देते तुम्हीं नशाय, बिगड़ी फिर तुम्हीं बनानेवाले ॥ ३ ॥ तुम्हारा रूप ये है ब्रह्मंड, तुम्हीं में सप्त द्वीप नव खंड । नदी सागर परवत बरबंड, तुम्हीं हौ सूर्य चन्द्र उजियाले ॥ ४ ॥ तुम्हीं हौ दिवस तुम्हीं हौ रात, तुम्हीं मध्याह्न तुम्हीं परभात । न माया तुम्हरी जानी जात, न कोउ अस जो तुम्हरी गतिपाले ॥ ५ ॥ प्रभू तुम हौ देवन के देव, इसीसे नाम पड़ा महदेव । ललल जनका तुहि बेड़ा खेव, कुमति दुखसे शिव मोहिं बचाले ॥ ६ ॥

टूममंगल ॥ २२ ॥

दिलेनादां को हम समुझाये जायँगे इसधुनिपर ॥

दादरा ॥

कलियुगमें जो हरिके गुण गाये जायँगे । वोतो पापों को अपने बहाये जायँगे ॥ (शेर) धर्ममग में जो मन आरूढ़ किया करते हैं । अमीरस कृष्ण सुयश जोके पिया करतेहैं ॥ प्रेमसे नाम जो गिरिधर का लिया करतेहैं । सबी संपति उन्हें घनश्याम दिया करतेहैं ॥ दोहा ॥ सविधि दान सन्मान अरु, मृदु बैनन सत्कार ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शुद्धभाव सबसे रखैं, संत विप्र सों प्यार॥ हरि ध्याये मनभाये वर पाये जायँगे॥ १॥ (शेर) धर्म के चर्ण जो हैं चार सो जतलातेहैं। वेदो पुराण भी षट्शास्त्र जो बतलातेहैं॥ उपनिषद भाष्य महाभाष्य यही गातेहैं। शौच तप सत्य दया मुख्य गिने जातेहैं॥ दोहा॥ इन चारों कृत नेम को, करै जो हित चितलाय॥ सो यह भवविधिभार से, बेगि पार हो जाय॥ जी चाहे लौ लाये सुख छाये जायँगे॥ २॥ (शेर) शौचका कर्म ये है जो के शुद्धतासे रहे। त्यागदे भक्ष्याभक्ष्य स्वयं पाकी होना चहे॥ तपका ये कर्म है पंचाग्नि तपके कष्ट सहे। यज्ञ अरु होम यजन जापकी रुचि मनमें गहे॥ दोहा॥ सत्यकर्म सत बोलना, नहीं झूंठ सों काम॥ दया मया सब जीवपर, परस्वारथ निष्काम॥ हितलाये चितलाये अदराये जायँगे॥ ३॥ (शेर) दान देने के समय शुद्ध हिया करतेहैं। पुण्यों प्रताप से युग युग वो जिया करतेहैं॥ मीत अपना जो के नँललनपिया करतेहैं। उन्हें घनश्याम सदा अपना प्रिया करते हैं॥ दोहा॥ सतयुग सत त्रेता तपौ, द्वापर शौच उपास। दया मया युत हरिभजन, कलियुग यही सुपास॥ चहि मानो न मानो समझाये जायँगे॥ ४॥

श्रीकृष्णजन्मोत्सवमंगल॥ २३॥

धनि धनि यह दिन मुहूर्त योग धनि लगनियां॥ (अन्तरा) धनि धनि नक्षत्र तिथी, सुखद भाद्रमास अती, सर्व कुशलप्रदा समय, सुन्दर सोहानियां॥ १॥ करत जासु जोगी गान, आवत नहिं तिन के ध्यान, तेतिस कोटि देवतान, केर शिरोमनियां॥ संत शारदा महेश, ध्यावत नितप्रति प्रजेश, पावत नहिं पार शेश,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

निगम नेति भनियां ॥ २ ॥ चलु चलु सखि सज शृँगार, मंगल वस्तु लै अपार, दूर्वा दधि हरद रोरि, अक्षत शुभ सुमनियां ॥ भूषण वसन रतन वित्त, लै चलु शिशु हित सचित्त, धनि धनि व्रजभाग भूरि, बरणत नहिं बनियां ॥ ३ ॥ करिये जग जन्म सुफल, लहिये लाहु सविधि सकल, पूर्व पुण्य प्रकटे आनि, हमरे तुम्हरे धनियां ॥ अहो आजकेर समय, लीजै सुख मोक्ष कमय, दिये विधि दुख दरिद गमय, उपज सुख अमानियां ॥ ४ ॥ आदि ब्रह्म आदि वपुष, दुर्लभ ज्यहि दरशन सुख, सो निर्मल अनन्दरूप, विहरै नँदक- नियां ॥ वरषत झर सुमन देव, जै जै परित्रिपुर एव, अशिर्वाद वरहिं व्रजके, ललन अरु ललननियां ॥ ५ ॥

ठूमिकभजनमंगल ॥ २४ ॥

जै राधा गिरिशजधरन की ॥ (अन्तरा) सुन्दर श्याम मनो- हर मूरति मोर मुकुट कलँगी मणियनकी ॥ १ ॥ संशय शमन सुधा निधि सुखदपि हारत विपदा जियन मरनकी ॥ २ ॥ रुक्मिनि हरण वरण वैदेही जन रुचि भरन शरन अशरन की ॥ ३ ॥ दीनद्याल वशभक्त दमोदर बलिहारी गइ नंदललन की ॥ ४ ॥

ठूममंगल भजन जोड़े का ॥ २५ ॥

जै सियपिय राधिकारमन की ॥ (अन्तरा) षोड़श कला पूर्ण अवतारी मर्यादा पुरुषोत्तमतन की ॥ १ ॥ श्यामलि सौहिनि मोहिनि मूरति सब सूरत अधिप सूरतन की ॥ २ ॥ गौतमनारि उबारण तारण यमलार्जुन जन क्लेश कदन की ॥ ३ ॥ शिवरि सुदामादिकन अमित गण जनमनरंजन भ्रम भंजन की ॥ ४ ॥ रिपु लंकेश कंस आराती दमघोषात्मज दलन मलन की ॥ ५ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अवध ललन ब्रज चन्द कन्द सुख छन्द फन्द दुख द्वन्द दमनकी॥६॥

टूममंगल भजन जोड़े का ॥ २६ ॥

बलि बलि गइ सियराम श्याम की। सुखद मूर्त्तिप्रद कोटि काम की ॥ (अन्तरा) कलिमलकदन तरण तारण जन कृपा काय सुख गुणन ग्रामकी ॥ १ ॥ गाधसुवन मखजनक सहायक भीष्मक प्रण रुचिदा अराम की ॥ २ ॥ श्रीनँदललन कौशिलानन्दन जय जगबन्दन मुक्तिधाम की ॥ ३ ॥

सीठनी (गारी) मंगल ॥ २७ ॥

गारी गावैं सुनाय सखियां सलोनी सुकुमारियां ॥ (अन्तरा) धनि धनि घड़ियां सोने की, जहां रह्यो सुख छाय, सारी शोभा रहस्य विहारियां ॥ १ ॥ धनि धनि नँदसुत के लालन, जिन्ह सुत सुखदाय, आय जन्मो मोहन गृह वारियां ॥ २ ॥ चिर जीवो ललन अनिरुद्ध जू, धनि धनि तोरी माय, जिन्ह तो से सुत जाये सुखारियां ॥ ३ ॥

सीठनी तर्ज़ दूसरी ॥ २८ ॥

सुनले बे सुनले भीष्मक मोरे राजे अपने तू भाग सराहु यह तो घड़ी सोने की ॥ (अन्तरा) धी मिस आनि नृपन करी दाया चिर जिओ कुमरि दुलाहु यह तो घड़ी सोने की ॥ १ ॥ नृप तुव ललनि परम बड़ भागिन तैं सुखसिन्धु प्रवाह यह तो घड़ी सोने की ॥ २ ॥

सीठनीमंगल ॥ २६ ॥

मोरे जी का अँदेशा कैसे जायगा कैसे जायगा प्यारे कैसे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जायगा ॥ (अन्तरा) बलदाऊ गोरे तुम कारे यह को हाल बतारे। अँदेशा कैसे जायगा ॥ १ ॥ कहँ दोउन हिलमिल तुहि जायो नँद वसुदेव बबारे। अँदेशा कैसे जायगा ॥ २ ॥ तैं तो ललन पितु मात भ्रात इन तीनों कीना अनुहारे। अँदेशा कैसे जायगा ॥ ३ ॥

सीठनीमंगल ॥ ३० ॥

तोरे कुलकी है रीति यही मोहन जिया जान सही रे ॥ (अन्तरा) बहिन तोरी अर्जुन सँग भागी कारिहि बुआ जई। मोहन जिया जान सही रे ॥ १ ॥ भाभी तोरी ललन द्रौपदी पंच पतिन संग्रही। मोहन जिया जान सही रे ॥ २ ॥

सीठनी जोड़ेकी ॥ ३१ ॥

मनमोहन लाल गुपाल हरे मधुसूदन ॥ (अन्तरा) चारन को चतुरा तैं जायो चितचोरन चोरन दधि रे मधुसूदन ॥ १ ॥ नन्दनँदन तुहि कहूं सांवरे धौं यशुदासुत मोहन रे मधुसूदन ॥ २ ॥ देवकिललन कहूं तुहि कै धौं वसुदेवै को लालन रे मधुसूदन ॥ ३ ॥ कै दोउअन तुहि साझेहि जायो पार न पायो वेदन रे मधुसूदन ॥ ४ ॥

सीठनी जोड़े की ॥ ३२ ॥

बनवारी तेरो भेद न पायो लला गिरिवरधारी रे ॥ (अन्तरा) तुहि वसुदेव देवकी जायो धौं नँद यशुमति महतारी रे गिरिवरधारी रे ॥ १ ॥ गोरे नन्द यशोमति गोरी तैं काहे कारो है विहारी रे गिरिवरधारी रे ॥ २ ॥ तूं वसुदेव देवकी समता उनहूं की ना अनुहारी रे गिरिवरधारी रे ॥ ३ ॥ बलदेवहु तन गौर वरण तोरी उनहूं से सूरत न्यारी रे गिरिवरधारी रे ॥ ४ ॥ सदा प्रपंच रह्यो तोरे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कुल में तेरो न दोष मुरारी रे गिरिवरधारी रे॥ ५ ॥ बहिन तुम्हारी सुनी सुभद्रा अरजुन संग पधारी रे गिरिवरधारी रे॥ ६ ॥ कुन्ती बुआ तुम्हारी ज्यहि ने जाये ललन कुँवारी रे गिरिवरधारी रे ॥७॥

सीठनी ॥ ३३ ॥

धनि धनि रुक्मिनि तेरो भाग जो पाये वर कृष्ण हरी । जियो युग युग दोउ छवि सिन्धु मिलइ विधि जोरि खरी ॥ (अन्तरा) धनि भीष्मक धनि प्रभा पुनीता जिन्ह जाई श्रीसुन्दरी ॥ जो पाये वर कृष्ण हरी ॥ १ ॥ धनि दिन आज लगन तिथि सायत धनि यह सुवरण घरी ॥ जो पाये वर कृष्ण हरी ॥ २ ॥ हैं धनि भाग ललन ललनी दै दरश सनाथ करी ॥ जो पाये वर कृष्ण हरी ॥ ३ ॥

बधावामंगल ॥ ३४ ॥

आज नँदभवन बधाई बाजे । यशुमति गृह सुख सकल संपदा साक्षात् प्रभु राजे ॥ (अन्तरा) कंचन रचित पात्र दूर्वा दधि, केशर कस्तूरी मेलित मधु, अतर गुलाल अबिर नाना विधि, वरषाजिर नँदराजे ॥ १ ॥ बिमला रमा उमा सुरनवला, गवैं बधाई सब व्रजअबला, कोउ डफ मृदँग बजातीं तबला, नव नगारगण गाजे ॥ २ ॥ तोरण ध्वज पताक चामर वर, छत्र बँदनवारी ढिग ढिगपर, गजमुक्तन पुरे चौक मनोहर, सुरपुर सुख मनु भ्राजे ॥ ३ ॥ निरतैं गुणि गंधर्व अलापैं, श्रुति प्रसंग युत कवि यश जापैं, नन्द-ललन व्रज जन्म धरा पै, झरें सुर सुमन समाजे ॥ ४ ॥

बधावामंगल ॥ ३५ ॥

आजमाई सरस बधाई बाजे ॥ (अन्तरा) श्रीपति जगतगुरु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यदुराई जन्म लियो ब्रजराजे ॥ १ ॥ भुवन चतुरदश की सुखसंपति नँदगृह गोकुल राजे ॥ २ ॥ सुर सुरत्रिय बन ढाढ़ि ढाढ़िनी निरत बजैं बहुबाजे ॥ ३ ॥ नारदादि शारद वीणा धुनि गगन दुंदुभी गाजे ॥ ४ ॥ सुरपुर मँगलाचार सुमनभर वरषत सुरन समाजे ॥ ५ ॥ नन्दललन यश भनत बंदिजन धनि घड़ि यह दिन आजे ॥ ६ ॥

ढाढ़िनियांमंगल ॥ ३६ ॥

नँदरानीने ढोटो जायो बधावा लाई ढाढ़िनियां ॥ (अन्तरा) ढाढ़िनियां गावत गीत मचल रही डोमिनियां ॥ नाई दाई झिगर मचाय नेग मांगे नाइनियां ॥ १ ॥ बनठन कर डाढ़िन डोम राग अरु रागिनियां ॥ आई सुरत्रिय अभिराम धारि तन ग्वालिनियां ॥ २ ॥ बाजति वर बेणु मृदंग पखावज हरमुनियां ॥ नृत्तैं श्रीहरि गुण गाय सकल ब्रजभामिनियां ॥ ३ ॥ सुर ब्रह्मा विष्णु महेश शेश महिधारिनियां ॥ इन्द्रादि इन्दु छवि निरखि जायँ बलिहारिनियां ॥ ४ ॥ धनरत्ननिछावर नेति करत नँद नँदरनियां ॥ श्रीनन्दललन चिर जिओ अशीसैं त्रिभुवनियां ॥ ५ ॥

ढाढ़िनियांमंगलजोड़ेका ॥ ३७ ॥

शुभ घड़ि सुन्दर दिन आज कुँवर जायो नँदरनियां ॥ (अन्तरा) तिथि आठैं वर बुधबार नछत्तर रोहिनियां ॥ शुभ भाद्र पक्ष अँधियार अर्धगत यामिनियां ॥ १ ॥ लागतखन हरषन योग मुहूर्त सुहावनियां ॥ त्रिभुवनपति लियो अवतार सकल जग तारनियां ॥ २ ॥ चलु चलुरी बधावा देवन बीर बज़ाजिनियां ॥ सजि अम्बर पीत पटोल सुघर सी भूजनियां ॥ ३ ॥ चलु साज सोहिलो बीर सुशील

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुनारिनियां ॥ लै सुन्दर रतनन जटित अभूषन कंचनियां ॥ ४ ॥ सज़ु केशर अबिर गुलाल सहेलि पसारिनियां ॥ यशुदा हित सोंठ पगाउ कन्दकी चासिनियां ॥ ५ ॥ चल सुघर बधाई साज सहेलिन गंधिनियां ॥ चोया अतरन सरबोर सींच नँदआँगनियां ॥ ६॥ सज़ु सुवरण चांदीवरक लसेती बीड़ियां ॥ लै चलिये बधावा देवन बीर तँबोलिनियां ॥ ७ ॥ मणि माणिक रतन अमोलिक हीरनकी कनियां ॥ चलु साज़ु जौहरिन बीर बधावा दरशनियां ॥ ८ ॥ सुनु एरी भटू सुकुमारिन गोटेवारिनियां ॥ पट साज़ु बादला किरन झालरैं लटकनियां ॥ ९ ॥ चलु साज सोहिलो बीर मनोहर मालिनियां ॥ लै सुमन सेहरा हार माल अनमोलिनियां ॥ १० ॥ एरी मेरी छैल व्रजवासिन बीर अहीरिनियां ॥ चलु गोरस केशर मेलि मचौ दधिकांदानियां ॥ ११ ॥ तिल तैल मनोहर धार धार वर भाजनियां ॥ जच्चातन मर्दन को लै चलु री तोलिनियां ॥ १२ ॥ सुनु एरी बीर मतिधीर सुघर हलवाइनियां ॥ सजु व्यंजन मधुनिमकीन बधावाकारनियां ॥ १३ ॥ एरी मेरी छैल छमकीलिन ऋतुफलि वारिनियां ॥ फल देकर लहु फल चार प्रमोद विहारिनियां ॥ १४ ॥ चलु साज बधावा देन बीर मुगलाइनियां ॥ मेवा दै दत्त्व महत्त्व पद्वि लहु पावनियां ॥ १५ ॥ सुनु शाकवणिक की नारि साजु तरकारिनियां ॥ दै साग पाग अनुराग भाग मनभावनियां ॥ १६ ॥ लै चलु भर भाजन भूरि प्रपूरि कुम्हारिनियां ॥ घटगागर कूमर दियल मनोरथ पूरनियां ॥ १७ ॥ चकई लट्टु डोर चटूइ झुँझुना फिरकनियां ॥ चलु साज बधावा देवन बीर बिसातिनियां ॥ १८ ॥ सुनु रजकिन ढोटा जायो यशोमति महरनियां ॥ चलु जच्चाके वसन परवार धनी हो निरधनियां ॥ १९ ॥ रचु पातर पातर पात पातरी अरु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दुनियां ॥ चलु लै चल यशुमति भौन सहेलिनि बारिनियां ॥ २० ॥ भरि कलश कालिन्दी नीर सगुन सुखदाइनियां ॥ लै चलु नँद द्वार मझार लाहु लहु महिरिनियां ॥ २१ ॥ गुहि रेशम बाधी झबा कमर की करधनियां ॥ पहिराउ नन्दसुत आंग मांगु वर पटविनियां ॥ २२ ॥ तुहि देत सँदेशो सुखद अरी सुनु धनुकुनियां ॥ यशुदासुत जन्मो आज तिहूँपुर को धनियां ॥ २३ ॥ धनि यह घड़ि लग्न मुहूर्त मनोर्थ पुरावनियां ॥ हरि दरशो परशो धाय सकल व्रजकामिनियां ॥ २४ ॥ भयो पूर्णब्रह्म नँदललन जन्म सुख सारनियां ॥ वरषैं सुर सुमननमाल त्रिपुर जै जै भनियां ॥ २५ ॥

आनन्दमंगल तथा दूधाभातीपद ॥ ३८ ॥

ललन तोरी सरहज सास मनाती। युगल मिल जीमहु दूधाभाती ॥ (अन्तरा) पलटौ ग्रास परस्पर प्रिया सँग प्रिया लै तुमहिं खवाती। सुन त्रिय वच लज नैन नीच कर मुसक्यत मंदन भाती॥ युगल मिल जीमहु दूधाभाती ॥ १ ॥ लजहु लाल न सकुच कछु धारो यह कुलरीति सनाती। करहु न बार तजहु अस हठपन यामें न लाज की बाती ॥ युगल मिल जीमहु दूधाभाती॥ २॥ यह नइ बात न है कछु लालन जो तुम मनै न भाती । तुम्हरे तात मात पुरखन से सदा यही चलि आती ॥ युगल मिलि जीमहु दूधाभाती ॥ ३ ॥ ज्यों त्यों कहि फुसलाय पोटकर भई सखि श्याम मनाती। जीमत भे दोउ ललन लाडिली लखि छबि त्रिय बलिजाती ॥ युगल मिलि जीमहु दूधाभाती ॥ ४ ॥

वर्त्तिका (बाती) मंगल ॥ ३९ ॥

पद बाती जोड़ने का ॥

ललन अब बाती से मिलवहु बाती। तोरी सारी सरहज समु-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

झाती॥ (अन्तरा) शीश नवत कर जोरत तोरे सारी त्रिय हाहा खाती। तुम नहिं कान करो विनती कछु निठुर तोर कुल-जाती॥ १॥ जान गईं ठनगन हठ तोरी चतुराई सब भांती। ज्यहि कारन सकुचत तुम मोहन सो सब बरण सुनाती॥ २॥ हैं दुइ मात तात दुइ तव यहि सकुचन लाज सुहाती। एक बाप के जाये जो होते तौ बाती जुर जाती॥ ३॥ मातु पितनु कुल बहिन सबनको लेहु बुलाय बराती। उन सों लेउ जुराय बातिका तोरि न एक बिसाती॥ ४॥ कै मैया बहिना सों पूंछो जिन्ह जह बाती काती। तोरे बुधि बल की नहिं मोहन सांच कहें न हँसाती॥ ५॥ कहि हरि हम कुलरीति न यह कुलरीति तुम्हार जनाती। सिखइ होयगी रीति ललिहु जह जो हमरे सँगजाती॥ ६॥ सुनि प्रिय बैन मनोहर हरिके भइँ त्रिय मुर मुसक्याती। सकल सराहि कही सखि कस हरि कहि लियो बातन बाती॥ ७॥ जो यक जननि बापके जाये सोइ हों बड़ अकलाती। यह तो द्वै चारन के जाये इन्हैं जीति को पाती॥ ८॥ रसबतियन भुरमाय प्रेमयुत भइँ मोहनै रिझाती। बाती जोर दई मनमोहन त्रिय तन मन बलिजाती॥ ९॥ बहुरि वसन बिच बाँधि पत्ररखी वरकी लाय धराती। पूजहु ललन अपन कुलदेवी बनी रहैं कुशलाती॥ १०॥

उपानहपरछनमंगल॥ ४०॥

ललन कुलदेवी को पूजहु आई॥ (अन्तरा) चरचो रोरि घोरि धरि राखी चांवर चारु चढ़ाई॥ मालपुहुप पहिराय प्रेमयुत आरति भोग लगाई॥ १॥ यह कुलपूज्य तुम्हारी लालन कहि पठयो बलराई॥ शीस नवो कर जोरो इन के मांगहु जो मन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भाई॥ २॥ प्रिया कुल नारि सरहजैं सारी कहैं बनाय बनाई॥ गँहर करन की बार न मोहन पूजत ही बनि आई॥ ३॥ सुनि त्रिय वचन रचन छलछन्दन बोले प्रभु मुसकाई॥ प्रकट धरौ इन सबन सामने को यह देवी माई॥ ४॥ कस बातैं तुम करत सांवरे इन चहो नग्न कराई॥ हमरे देव कहुँ मोहि न लेवैं तौ जाउ इनहुँ गँवाई॥ ५॥ सखिन ओरि लखि लाल कह्यो मम नाहक करति हँसाई॥ देवि बताय कपट कर हमसों चहो पांवरी पुजाई॥ ६॥ जीति सकत इनसों को सजनी यह बड़ चतुर कन्हाई॥ दुइ मैया दुइ बाप इन्हन के यासन बुधि अधिकाई॥ ७॥ ललन प्रेमवश लाय सरहजनु सब कुलरीति कराई॥ ससुरारिन रस प्रेमपाग प्रभु पूजी देवि मनाई॥ ८॥

आशीर्वादात्मकमंगल ॥ ४१ ॥

कवित्त ॥

राजों महराजों सरताजों बादशाहों सन बाला से विशाला बाला मर्तबे सुहाते हो। वर्षा मिठ बैनन अमोले मोले जक्कमन सभ्यता स्वभाव सुठि शील सरसाते हो॥ श्रेष्ठ अवतंश वंश भलई प्रदीप्त तन मंडित मनुष्यताई सुषमा दृढ़ाते हो। धराकाश चन्द्र भानु गंगजल जौलौं तौलौं जीवो हो ललनवन्त सर्व सुखमाते हो॥

प्रशंसामंगल ॥ ४२ ॥

सजनबड़ाई कवित्त ॥

चतुर्भुजमुरारी के अंश अवतारी तुम छविपति पूर्ण हंस गुप्त प्रकटाने हो। दीन द्विज सन्त परमारथी व्रती अनन्त कवि गुणी हेत दया दान के खजाने हो॥ दशोदिशि देश औ विदेश प्रतिभौन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भौन यशुदाललन भक्त पूरण प्रमाने हो। तुमसे प्रतापी धर्मी पुण्यवान को दरश मिलबो कठिन तुम बांछित के बाने हो ॥

प्रशंसामंगल ॥ ४३ ॥

सवैया ॥

श्रीमत राज धुरंधर तो यश पूर्णशशी सम तुल्य प्रकासै। कर्ण सो दान कुबेर सो कोष विदूर सो ध्यान सु हीय विकासै ॥ आयु सु लोमश मारकँडेसम तेज रवी बल भीम सो भ्यासै। हो रण-धीर समीरज से ललनौ प्रमुदादिक भौन विलासै ॥

शिष्टाचार (विनति=आमंत्रण) मंगल ॥ ४४ ॥

वरपक्ष सवैया ॥

वर तात वधू धनदै प्रमुदो पद पूजि बरातिन तुष्ट कियो। दय मान्यन मान धनै मगन्यों जन पामर स्वादिक भक्ष दियो ॥ त्रिय हावरुभाव कटाक्षन ते नव ज्वानन मोदित कीन्ह दियो। निज दै तनया नँद के ललनै यश भूप तिहूंपुरमाहिं लियो ॥

वि० मं० कन्यापक्ष ॥ ४५ ॥

गृहणी कमला गउ कामद धेनुरु कल्पतरू तरु है तुम्हरा। अणिमादिक सिद्धिहि चेरि सदा मुनियों हृदि ना दरशो अपरा ॥ यदुनाथ ममै गृह आनि दयाकर सूक्ष्महि सेवनते अदरा। नँद के ललनै धनि धन्य सनाथ किये हम से जग तुच्छ नरा ॥

वि० मं० वरपक्ष ॥ ४६ ॥

कवित्त ॥

ललन भनौंधौं कल्पतरु काष्ठ नम्र तुम समता सुमेरै दूं अचल गतिधारी है। चिन्तामणि तुल्य कहूं तदपि पाषाणवत कामधेनु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्यानहुँ सो पशु अवतारी है ॥ भानु सो संतापी कहूं रत्न सिन्धु क्षार वारि नृमाणों निशेश सम विकल विकारी है। काम सो निहंग पुनि उपमा सदृशों कौन तुमसो न और शिरमौर भूप भारी है ॥

वि० मं० कन्यापक्ष ॥ ४७ ॥

अवनि महान सम नाथ यश तोर कहूं ताहि निधि घेरि कर राख्यो चहुँ ओरसे। सिन्धु सों कहूं अगस्त्य मुनी ताहि सोखगये उनसे नक्षत्र नभ दीपत करोरसे ॥ व्योमसों कहूं पदन नापि लियो विष्णुमूर्त्ति सो तो पितु तीही बसैं बँधी प्रेमडोरसे। कासों समिताऊं तोर मात यश ध्याऊं धन्य कोख सो जो जाये तोसे ललन किशोरसे ॥

वि० मं० वरपक्ष ॥ ४८ ॥

सप्त सिन्धु अम्बु बिन्दु सकल समेट जेठ स्याही श्याम रंग की सुहावनी रचाय कै। प्रबल पुनीत पात्र पृथिवी अनन्त भरि वाणी शेश रसना की लेखनी बनाय कै ॥ अम्बर सो पत्र तापै तो यश विरंचि हारे शंभु हू न पावैं पारावार गुण गाय कै। ललनसी मोर मति तोर यश है अमित कहां लौं बड़ाई करों तुमको सुनाय कै ॥

वि० मं० कन्यापक्ष ॥ ४९ ॥

शुभ सत्य गूढ़ दृढ़ मूल कीर्त्ति व्रती द्रुम मधुर वचन मानों पल्लव प्रमाने हो। ज्ञान गुणरूपी पुष्प सुकृति फलानु फले शील सन्तोषिक सुठि छाया छहराने हो ॥ अवनि अमर ऐस कल्पवृक्ष नर भेष तुमसे तो तुम्हीं नाथ जक्त निर्माने हो। चिरंजीव तुम धन्य

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ललन तुम्हार धन्य तनया हमार भाग्य हमैं जन जाने हो॥

वि० मं० पुनःकन्यापक्षे हास्यवचनम्॥ ५०॥

पीनोत्तुंगस्तनी दिव्य मलयामलंत अंग विमल विलोल नेत्र तरुणी सुशीलसी। चन्द्रवदनी अनूप तिहूंपुर शोभा भूप मृदुबैनवारी प्यारी सुकला असीलसी॥ सुखदाभिराम वाम प्रेमकी सो आम धाम कामभा अनूठ चाम भाव भवकीलसी। ऐस बाल ज्यहि ना आलिंगी वृथा जन्म तासु सो तुव ललन हेत दे नृप रँगीलसी॥

वि० मं० वरपक्ष॥ ५१॥

दासी क्रोध माहिं जौन रति माहिं रम्भा सम भोजन खवै जननि तुल्य भाववारी हो। आपदा समैया बिच मित्रसी ललन जौन ललना सुशीला कुल लाजवती भारी हो॥ प्रेमपुञ्ज पुष्करी मनोज स्वच्छ भाहभरी विमल विलोल लोल लोचनी सुखारी हो। ऐसी जौन नारी सुकुमारी छविवारी प्यारी रूप की उजारी सो हमारी घरवारी हो॥

वि० मं० कन्यापक्षे हास्यवचनम्॥ ५२॥

मग मग विहर विलोकिये हमार देश नूतन रसाल छवि ललित अमोलै हैं। माननीनुमान भंगकारी कोकिला कुलंग मोहिनीश रूप रंग वाणी वर बोलै हैं॥ नारी रूपवारी सो न आवैं दृष्टिगोचर में ऐसी छविवारी प्यारी खगपंक्ति डोलै हैं। लीजे पंच बाण मैन कीजिये विजय सचैन ललन तुम्हार जौन रस-माहिं मोलै हैं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वि० मं० वरपक्षे ॥ ५३ ॥

बाट बाट बिहरैं तो साधुन को संग करैं जिन्ह सतसंगते सुनैं सुयश श्याम को। दुस्तर अनन्त जग कीर्त्तन गुपाल लाल नाशक विकार पंच धारे ध्यान राम को॥ ध्याये नन्दललन के आवैं ना समीप दुःखद्वन्द छलछन्द फन्द दीखैं नाहिं नाम को। नामको अराधी अपराधी हो न श्याम को प्रमोद परिणाम को हो बासी ब्रह्मधाम का॥

भोज्यमंगलजीवनवारलवणसामग्रीवर्णन ॥ ५४ ॥

लावनी॥

सजी समधी सुन्दर ज्योनार। सलोनी वस्तु न पारावार ॥ टेक॥ मसालेदार तिकोनेहैं। सेव बहुभांति सलोनेहैं॥ शकरपाले सो समोनेहैं। दाल मोठिक बहु दोनेहैं॥ दोहरा॥ उरद चना मोठी मटर, मूंग मसूरिक दाल। मठरी लघु बड़ महामुलायम, पापरियां नइ चाल॥ बेशनी खा कणिक कृतकार। सलोनी वस्तु न पारावार॥ १॥ सेमियां सुघर विविध रंगी। टिकियां लघु जंगी चंगी॥ पिराकन की नहिं कुछ तंगी। परांठे खारन के संगी॥ दोहरा॥ सेम खरबुजा तरबुजी, सोंधे बीज तलाय। भिन्न भिन्न सज धरीं दुनैयां, सुन्दर भांति सजाय॥ पानी हड़ जीरा नई बहार। सलोनी वस्तु न पारावार॥ २॥ मोइनी आधिया घृत घोरी। लुचलुची लुचई नहिं थोरी॥ मसालन महक पिठी बोरी। कचौरी कल कोमल ढोरी॥ दोहरा॥ पूरी पूरीरीतिसन, पुरे पुरी रसरूप। बरा घुआंसी मूंग अरहरी, चणिक फुलौरी तूप॥ अधौटा दूध मलाईदार। सलोनी वस्तु न पारावार॥ ३॥ चचेड़े जिमीकन्द

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तोरी। करेला भटा खेत जोरी॥ कासिफल ककरी सरसों री। रताल्
खीरा घृत घोरी॥ दोहरा॥ आदी कमरखि मिरचई, सोया पालक
जोउ। मेथी भिंडि मूलियां गोभी, आलू ढेडस सोउ॥ कुल्फा
चूका अर्वी दुप्रकार। सलोनी वस्तु न पारावार॥ ४॥ गहर कटहल
कड़ड़ी प्यारी। किसमिसी बढ़ियातरकारी॥ बरणवहु मृज न्यारी
न्यारी। धरी पारस पतरिन सारी॥ दोहरा॥ रचे रायते चटपटे, खीरा
ककरी सान। कुम्हड़ा लौकी गाजर मूली, आम अमीले जान॥ कली
कचनारन में दधि डार। सलोनी वस्तु न पारावार॥ ५॥ खटाई
तरह तरह केरी। तैल सिरका मिठास गेरी॥ गुड़ब्बा गलका की
ढेरी। रायते चटनी बहुतेरी॥ दोहरा॥ आम ईमली कैथकी, कदम
करोंदा केर। दाख छुआरा किसमिस अदरकि, निबू अनार चुकेर॥
अम्लबेती टेंटि अलूबुखार। सलोनी वस्तु न पारावार॥ ६॥
खटमिठी अजब अचारी है। आमड़ा अदरकि न्यारी है॥ आब-
जोशी दाखवारी है। किसमिसी और छुआरी है॥ दोहरा॥ तूत
गिलौरी तैल की, सूखा भरमा आम। खटमिठ दुरमा निंबू करोंदा,
आक मूलिया जाम॥ बेल झरबेर कमरखी झार। सलोनी वस्तु
न पारावार॥ ७॥ तुरश अंजिर अनारदाना। अमलतासी
मिरचिया नाना॥ खीरा ककरी नरिङ्गियाना। बांसाभिटुअन अ-
नेक बाना॥ दोहरा॥ सफरिक सरफारेविड़िक, जामुन रँदखर-
बूज। चणिक खरबुजा सेम आलुकी, सकरकंदि तरबूज॥ घिया
सियफल बरडा घ्युकार। सलोनी वस्तु न पारावार॥ ८॥ लभे-
रिक ललित शुष्क सह भूर। गाजरिक राई का मशहूर॥ मसाले
मेल अमित भरपूर। विविधविधि चूरन केरी चूर॥ दोहरा॥ लौंग
इलाची जायफल, जावित्री कस्तूरि। चूना कथा तमाखू छाली,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बीड़ी वर्कप्रपूरि ॥ सुगंधिक अतर इत्यादि अपार। सलोनी वस्तु न पारावार ॥ ९ ॥ केवड़ा खस गुलाब ढाले। तरंगैं लेयँ जल निराले ॥ घूंट जो एकहु मुख डाले। रोग आलस अजीर्ण टाले ॥ दोहरा ॥ दूल्हा श्रीनँदललन सो, समधि देवकीराय। वृन्द बरतिया करहिं सरहना, हिय आनंद सृजाय ॥ सुफल ज्योनार हो सजन तुम्हार। सलोनी वस्तु न पारावार ॥ १० ॥

अशनमंगल ॥ ५५ ॥

जीमनवार ॥

समिष्टसामग्रीवर्णन ॥

धनि सज्जन समधी सार, सजी ज्योनार भली ॥ (अन्तरा) क्या बालूसाही बढ़िया, डाला घृतमोइन अधिया। मुख मेलत बेगि बिलाय, सुँधावट सुगँध झली ॥ १ ॥ बरफी केशरिया पीली, मनुसुधा सवाद लसीली। पिस्तई हरित हिय करें, गरी घिय घृत मसली ॥ २ ॥ बादामी दामनवाली, अरुदानेदार निराली। घुटमा चिरोंजिकी न्यारी, चाशनी कन्द ढली ॥ ३ ॥ किस्मिसी मूंग की बरफी, प्रतिबरफी मोल अशरफी। जिन्ह देखत हिया अघाय, क्षुधा झट जाय चली ॥ ४ ॥ गुल गुलि गुलाब जामुनियां, निखरीं नवनीत अमनियां। नित खाय अघाय न जिया, जिनका है जा अमली ॥ ५ ॥ क्या ताजे ताजे खाजे, जिन पै रँग रूप विराजे। उन पेखत प्रेम पुराय, क्षुधा पोषक प्रबली ॥ ६ ॥ है खजुला खुरमा खासा, खरपुरी खजूर बतासा। फेनी बताशफेनियां, एक से यक उज-ली ॥ ७ ॥ दूधिया दूधीले स्वादन, घृत दूने दय मरजादन। सांकल साँकलि परसाय, सजीं सिजला सिजली ॥ ८ ॥ अंमृती अमिरती

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आला, वर बनाव सांचे ढाला। बहु भांतिक धरीं सजाय, बड़ी छोटी मझली ॥ ९ ॥ पेठा रसभेंटा परिया, घिय कुम्हड़ा केर सुघरिया। नव नम्र नम्र वर भांति, निकाई नहिं नकली ॥ १० ॥ दधि बूरा दोनन दीपै, मालपुआ पुआ रसनीपै। नहिं कहत बनै ज्योनार, समग्री बहु सलली ॥ ११ ॥ पट्टी पेड़ा लौंजादी, मृदु मधु सुपाग संवादी। मेवा बाटी खेसनी, सूत रीतिक अगली ॥ १२ ॥ गरी मिगी चिरोंजी घुइयां, अस अमित पागभर तुइयां। नव ठौर अनेक रचाय, नवल जिनकी पटली ॥ १३ ॥ चिरजिये दोउ बनरा बनरी, धनि धनि यह ब्याहिक सुघरी। नँदललन कृपाते उभय, सजन की आश फली ॥ १४ ॥

पतरीबन्धनमंगल ॥ ५६ ॥

सीठनी ॥

बांधूं सजन तोरी पातरी बांधूं सो दोने नाल ॥ बांधूं कचौरी पूरियां तरकारी सोंठ सुहाल ॥ १ ॥ बांधूं जो पेड़े पापरा बरफी बदामी सेव ॥ बांधूं जो मैदा बेसनी मोदक जलेबी घेव ॥ २ ॥ बूंदी जो बांधूं ढुरढुरी मिसरी मलाई चारु ॥ रस डोबियां बांधूं अमिरती अमृत स्वादु सुहारु ॥ ३ ॥ बांधूं जो ताजे ताजे खाजे खुरमें खेस खजूर ॥ खसखसी नानखताइयां फेनियां मोतीचूर ॥ ४ ॥ बांधूं जो बालूसाही खस्ता मालपुआ पुनीत ॥ गुपचुप सँदेश गुलाबजामुन कपुर कन्द समीत ॥ ५ ॥ बांधूं जो मोहनभोग पेठा भुरभुरी पपरीहु ॥ हलवा सुहन गोझा अँदरसा शकरपाल टिकीहु ॥ ६ ॥ बांधूं तिकोने सेम मठरी दालमोठ समेत ॥ लौं-जात लौंज कलौंजि मावा सुठि बसौंधी सेत ॥ ७ ॥ बांधूं सकल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मिष्टानियां निमकीन सामा जौन ॥ चटनी अचार विचारवत दधि दूध सिखरिनि तौन ॥ ८ ॥ बांधूं मुरब्बे फल फलैरी भिन्न भिन्न विशाल ॥ बांधूं रुची समधी बराती नँदललन गोपाल ॥ ९ ॥

पतरीछोरनमं० ॥ ५७ ॥

सुरबधू दादिन बनी हरिसँग पातरी खोलत भई ॥ कुल विरद वरणत बन्दिजन भीष्मकभुवन आनँदमई ॥ १ ॥ बरषैं सुमन हरषैं सुमन बहुविधि बधावे बाजहीं ॥ दुंदुभी गगन नगार नौबत माधुरी धुनि गाजहीं ॥ २ ॥ खोलूं खजूले खुरमे खाजे ताजे ताजे घेवरा ॥ बांधूं प्रभा भीष्मक नृपति सुकुमार तनके जेवरा ॥ ३ ॥ खोली कचौरी पूरी पापर साग भाजी रायते ॥ बांधे सुलहँगा कंचुकी डुपटानुचीरा चायते ॥ ४ ॥ खोली अमिरती बरफियां बूंदियां मोहनभोग जो ॥ बांधे सुअँग अँग समधि के नखशिख सकल ही योग जो ॥ ५ ॥ खोले जो लड्डू पेड़े पेठा पापरी सामा मधू ॥ बांधूं सबै लगवार समधिन की नतीली नव वधू ॥ ६ ॥ खोले तिकोने वस्तु निमकीली दधीली जो रही ॥ खोला बँधा जल साजना जिमिये ललन जिय सुखलही ॥ ७ ॥

समधैंमं० ॥ ५८ ॥

सीठनी ॥

समधिन अलबेली नारि नवेली रंग भरी ॥ (अन्तरा) तेरी अँखियां आम की फँकियां सैन कटरिया ॥ मनु भौं नागिनियां चखैं अमिरस शशि थलरी ॥ १ ॥ तेरी अलकैं अतर लपेटी पटियां प्यारी ॥ मुखचन्द उढनियां नीलवरण मनु छइ बदरी ॥ २ ॥ बिंदिया माथे पर श्याम अरुण रँगवारी ॥ जनु काम वाम युत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दिपै साज नव फव छविरी ॥ ३ ॥ दोउ गाल तेरे मोइनी कचौरी मानो ॥ ओठों मिसिया की धड़ी दन्त मनु हीर लरी ॥ ४ ॥ क्या मधुर तेरी मुसक्यान प्रान सुख पोषक ॥ मृदु वचन मोहिनी वसीकरन आकरषनरी ॥ ५ ॥ चित चोरनि चिबुक सलोनी सुन्दरताई ॥ जोबन पर बरषै नूर अजब अँगिया सिदरी ॥ ६ ॥ गलपीक लीक दरशानी हार नौलखिया ॥ गोरी बहियां कँगनी कँगन हरे मनुआं मुँदरी ॥ ७ ॥ तोरी पतली कमर बलखाय लचक मन लेती ॥ जंघा मखमलिया उदर झनक नूपुर पगरी ॥ ८ ॥ समधिन तेरा नखरा नया निराला जोबन ॥ करदे सो बरतियन दान करै तेरा भला हरी ॥ ९ ॥ तेरा दिया दान नहिं निष्फल जानेवाला ॥ जा गोद खिलैहो ललन पुरै मंशा हमरी ॥ १० ॥

समधिन (सीठनी) मंगल ॥ ५९ ॥

समधिन तेरा जुबना क्या है जदुआडारे ॥ (अन्तरा) तेरे नैन नुकीले तिरछी चितवन बरछी ॥ भौं पलकैं बान कमान निशाना मारे ॥ १ ॥ तेरी जुल्फैं क्या कजराली घूंघरवाली ॥ शशिमुख कच मनु घनघटा छटा नइ धारे ॥ २ ॥ कुंडलित सितारन बेंदी भाल चमंकै ॥ मनु उदय भानु भा आनि थान शशि तारे ॥ ३ ॥ कजरा करे डारे काट करिजवा केश ॥ गालों गुलाब से आब अधिक अधिकारे ॥ ४ ॥ दाड़िम दाने धौं दशन हँसन मन मुहनी ॥ रसबतियन अमि झर झरै अधर अरुनारे ॥ ५ ॥ तेरी नाक सुआसी समधिन नथ बेशरिया ॥ चोपैं चितचोपैं जोपै कोऊ निहारे ॥ ६ ॥ ठोंड़ीका गुदना गुदगुदाये मन मेरा ॥ तेरा गला सुराहीदार गहन रतनारे ॥ ७ ॥ दोउ मदन नगाड़े उलट धरे धौं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

फलदो ॥ दाड़िम नरंगि धौं जुबना गोल गुलारे ॥ ८ ॥ अँगिया जरकसिया जुलुम सजावट करती ॥ भुज कमलनालपर जोशन जोबनवारे ॥ ९ ॥ हथफूल कड़े कंगन पहुँची हाथों में ॥ अँगुली चंपक की कली कमल कर प्यारे ॥ १० ॥ गोरी गोरी बहियनु में चुरियां हरी हरी दीपैं ॥ मुँदरीका नगीना मन आरिसी छ्लारे ॥ ११ ॥ तेरा उदर मुलायम मखमल माखनसेती ॥ तोंदी लघु त्रिबली मनु अमिकुण्ड किनारे ॥ १२ ॥ चीतेसी कमर करधनी नितंबन ऊपर ॥ रंभा सी जंघा शिर सारी सब्ज विहारे ॥ १३ ॥ परियां पिंडुली पैरन की प्यारी प्यारी ॥ पग नुपुर तेरे मनु बाजैं मदन नगारे ॥ १४ ॥ पायँन अँगुरी करपूर जोति सी दीपैं ॥ नख मोती जोती दिपैं महावर पारे ॥ १५ ॥ नँदललन कृपाते समधिन युग युग जीवो ॥ बहु ललन खिलावो गोद मोद उपचारे ॥ १६ ॥

सीठनीमंगल ॥ ६० ॥

मैंने खड़ा किया तेरी समधिन का भरतार ॥ (अन्तरा) एरी मेरी समधिन तू करवाले, समधी से समधियाचार ॥ १ ॥ डलवाले पसराय पांवड़ा, धरवाले नेगाचार ॥ २ ॥ मीठा दै समधी को मुहाले, डाले वो तन मन वार ॥ ३ ॥ जियें ललन दे सुभग दान, तेरा भला करै करतार ॥ ४ ॥

जोड़ेकीसीठनीमंगल ॥ ६१ ॥

मैंने खड़ा किया समधी को तेरे द्वार ॥ (अन्तरा) समधिन तू डलवाती क्यों ना, गल हीरनदा हार ॥ १ ॥ समधिन सब कर वाले नेग, तेरा समधी सीध विचार ॥ २ ॥ समधिन तू मरवाती

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

क्यों ना, भूंकत श्वान तुम्हार ॥ ३ ॥ समधिन तू उखड़ाती क्यों ना, बुरी घास आगार ॥ ४ ॥ समधिन तू कुटवाती क्यों ना, चूती छत्त अपार ॥ ५ ॥ समधिन तू ठुकवाती क्यों ना, पाटी पलका चार ॥ ६ ॥ समधिन तू मलवाती क्यों ना, बटना खुशबूदार ॥ ७ ॥ समधिन तू लगवाती क्यों ना, पान मसालेदार ॥ ८ ॥ समधिन तू फिरवाती क्यों ना, कंघी अपने बार ॥ ९ ॥ समधिन तू दिलवाती क्यों ना, जो कुछ नेग हमार ॥ १० ॥ समधिन क्यों शरमाती करवा, ले जल्दी दे वार ॥ ११ ॥ समधिन क्यों सकुचाती डलवा, ले दे मीठ सुहार ॥ १२ ॥ समधिन क्यों मुरि जाती समधी, ले घर घुसै उतार ॥ १३ ॥ हम सब देत अशीश जियें तोरी, लली ललन परिवार ॥ १४ ॥

जोड़ेकीसीठनीमंगल ॥ ६२ ॥

सुनु समधिन यह दिन मिलै न बारम्बारे। समधी का खड़ा कराले डेरा द्वारे ॥ (अन्तरा) दे बोसा घर जहँ बुरका होयँ पसारे ॥ डालें तहँ आसन सांध बरतिया न्यारे ॥ १ ॥ करवा घरवाले खातिर समधी केरी ॥ मरवा घरवालो धीरज से सेजलवारे ॥ २ ॥ ठुकवाले पाटी सागौंनी की नीकी ॥ अस पलँग हो पग तब समधी भीतर डारे ॥ ३ ॥ दे शुभग अशन ना बुरे होयँ मोइनियां ॥ धनियां सो मसालेदार साग रसवारे ॥ ४ ॥ दिलवा दो जोबनै दान दहेज बरतियन ॥ हों ललन चार यहि सालहि सुघर तुम्हारे ॥ ५ ॥

(तथा) सीठनीमंगल ॥ ६३ ॥

हम सुनियत समधिन मोर छिनारा करती ॥ (अन्तरा) नहिं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

छोड़त रसिया एक निहारा करती ॥ नित तीर पड़ोसिन के फँद-वारा करती ॥ १ ॥ यहि कारन हम सब रसिक बरतिया लाये ॥ लगवार हमहुँ जो तनक इशारा करती ॥ २ ॥ जन्में यहि सम्बत लली ललन दश पांचा ॥ प्रमुदै समधिन जो कहा हमारा करती ॥ ३ ॥

जोड़े की सीठनीमंगल ॥ ६४ ॥

मलोला लाया यह जीरा हमार बुरका खोलो ॥ (अन्तरा) आंख मिचौली होली री समधिन लो लाड़ोरस घोलो ॥ घरवाले जर बुरदै हमका बुरा न नैक टटोलो ॥ १ ॥ हथिया ले नथिया लेहै सोना नेग रसूमी लोलो ॥ नन्दललन की शपथ करालो समधिन टुक हँसि बोलो ॥ २ ॥

सेहरामंगल ॥ ६५ ॥

शुभघड़ि शुभलग्न मुहूर्त सेहरा मालिन लाइये । नीकी नीकी मणि माणिक लड़ियां मोतिन की गुँधाइये ॥ (अन्तरा) बेला चमेली निवारी जुही सोने के तारों पुहाइये ॥ बिच बिच हीरा पन्ना चुन्नी नव निलमणि सजवाइये ॥ १ ॥ बनेरे श्री विहारी के शिर ज्यहि छिन बँधवाइये ॥ भूषन पट निछावर रतन मनमानो धन पाइये ॥ २ ॥ धनि धनि तोरे भाग जाग यशुदा ललन ध्याइये ॥ पाइये प्रमोद बने की मातु पितु रिझाइये ॥ ३ ॥

(अश्व) घोड़ीमंगल ॥ ६६ ॥

बनरे का साइसवा यार रँगीली घोड़ी लाया मज़ेदार ॥ (अन्तरा) नौलखिया जीन सजीली, हीरा मोती पन्ना लाल जड़ीली ॥ अँग अँग में अभूषन छजें गंगायमुनी सो तरेह-दार ॥ १ ॥ मेरा बनरा दिलदरियाई, जिस्की घोड़ी असल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दरियाई ॥ पानी छलकै न फूटै बताशा, तमाशासी चाल चलवार ॥ २ ॥ बनरा मेरा राजदुलारा, सेहरा हीरा मोती लड़वारा ॥ बागा सूहा जरीदा विशाल, बाँधे पटका झालरदार ॥ ३ ॥ दुलहा नँदलल्लन लड़ैता, मेंहदी करकँगन लसैता ॥ बांकी घोड़ी पै सवार, परिवार करै तन मन धन बलिहार ॥ ४ ॥

(हय) घोड़ीमंगल ॥ ६७ ॥

बन्ने की घोड़ी रँगीली है वैसा रँगीला बना ॥ (अन्तरा) घोड़ी साजों सृँगारों सलूनी, नोखी शोभा बन्ने मुखपै दूनी ॥ सूहा बागा अनोखी बहार, दिपैं हीरा मोती पना ॥ १ ॥ सोनेछत्र ढुरै शीश चौंरा, हाथ कंगन कंचनियां शिर मौरा ॥ राई माई बाबुल बहिना उतारें, आरती कुलिक जना ॥ २ ॥ धनि धनि नँद नँदजूकी रनियां, जिन जाये ललन सुखदनियां ॥ बलि जायें लखि छबि ब्रजनार, उचारे मँगलिक बचना ॥ ३ ॥

(हय) घोड़ीमंगल ॥ ६८ ॥

नौलखिया घोड़ी मजेदार जोबन् बौछार करती । मेरा बन्ना बना तरेहदार अदा मुख बिहार करती ॥ (अन्तरा) घोड़ी साजों सजीली सुहावे, बन्ना रंगरँगीला मन भावे । घोड़ी पै सवार करती ॥ १ ॥ घोड़ी चंचल चलै चाल बांकी, पानी छल्कै न झल्कै चलांकी । मलीदा अहार करती ॥ २ ॥ घोड़ी लाखों में यक अलबेली, वैसी बन्ने की सूरत नबेली । छटा उजियार करती ॥ ३ ॥ घोड़ी छूने न दे अपनी छैयां, मानो बन्ने को लीन्हे कन्हैयां । शिकारी शिकार करती ॥ ४ ॥ घोड़ी का रूप रँग क्या तमाशा, चाल चलती न फूटै बताशा । सितम बेशुमार करती ॥ ५ ॥ घोड़ी सूरत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सलोनी सोहनियां, मेरे बन्ने की मूरत मोहनियां। पै तन् मन् न्यौछावर करती ॥ ६ ॥ घोड़ी दामो अनमोल दरियाई, मेरा बन्ना वो दिल दरियाई। निकाई गुहार करती ॥ ७ ॥ जैसा नँद का ललन बन्ना नामी, वैसी बन्नेकी घोड़ी धूमधामी। बड़ाई संसार करती ॥ ८ ॥

कहीं जागे आधीरात नैना कुसुंभी रँग हैगये—इस धुनिपर ॥

बनरामंगल ॥ ६९ ॥

बांकी बांधे तलवार, बनरे का नखरा बांका ॥ (अन्तरा) अलकें मानो नागिनियां कारी, सैन कटारी दुधार। नैनों का कजरा बांका ॥ १ ॥ सोहै माथे तिलक केसरिया, चीरा शिर कलँगीदार। गल सोहै दुलरा बांका ॥ २ ॥ नोखी नाक बुलाक अनोखी, चोखी मुख पै बहार। सब गुन में अगरा बांका ॥ ३ ॥ बीड़ी चाबे सुगंधों लसीली, लाली लालों से अति रँगदार। चन्दा से उजरा बांका ॥ ४ ॥ मीठी बतियों भरा जादू टुनवा, वर्षै फूलन् बौछार। हँसन में सो रस मधुरा बांका ॥ ५ ॥ यशुदा का ललन वो लड़ैता, बांकी घोड़ी पै सवार। बांकी बनरी का बनरा बांका ॥ ६ ॥

बनरामंगल ॥ ७० ॥

बनेका बागा पटुका लाल, ज़रीदा चीरा रँगीला ॥ (अन्तरा) बनेका तंबा सूहा लाल, जोड़ा रतनों जड़ीला ॥ १ ॥ बनेके गल हीरोंदा हार, सेहरा मुतियों गुँधीला ॥ २ ॥ बनेके मेहँदी हाथों लाल, कँगनवा बांधे दुतीला ॥ ३ ॥ बनेकी घोड़ी सूही लाल, जड़ाऊ जीनबसीला ॥ ४ ॥ बनेके मुखमें बीड़ी लाल, अँग अँग अतरों से सरसीला ॥ ५ ॥ बनेकी छविपै बलिहारी, नँदललन छैल छबीला ॥ ६ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बनरामंगल ॥ ७१ ॥

बन्ना मांगै लिल्लीघोड़ी दुल दुल घोड़ी की असवारी, अरु दरियाई घोड़ी न्यारी ॥ (अन्तरा) बन्ना मांगै तिरछी बरछी तेग कटारी दो तलवारी, रसिया युबना केर शिकारी । दिल दरियाई घोड़ी न्यारी ॥ १ ॥ बन्ना मांगै जोड़ा तोड़ा होड़ी होड़ा पट ज़र-तारी, मोतीमहलों सेज अटारी । दिल दरियाई घोड़ी न्यारी ॥ २ ॥ बन्ना माँगै बाँकी बनरी सब गुण अगरी रूप उजारी, राजकुमारी सी सुकुमारी । दिल दरियाई घोड़ी न्यारी ॥ ३ ॥ बन्ना मांगै सरहज सारी प्यारी ससुरारी की नारी, नँद का ललन छैल बनवारी । दिल दरियाई घोड़ी न्यारी ॥ ४ ॥

बनरामंगल ॥ ७२ ॥

बन्ना बीड़ी मांगै न्यारी नागर मघइ महोबा छेया और दिस-उरी बँगला वारी ॥ (अन्तरा) चूना चांगल जिसमें कैसा, दूध मलाई खोया जैसा, दधि घ्युसा होवै टकसारी ॥ बन्ना बीड़ी मांगै न्यारी० ॥ १ ॥ कत्था अलबत्ता कलकत्ता केस, क्योड़ा सुगँध ब-सेरा । गेरा गुलाबरस मलियारी ॥ बन्ना बीड़ी मांगै न्यारी० ॥ २ ॥ छाली बार सिवारसे पातर, होवें कतरी चिकनी नादर । भिगई दुध गुलाब सुपियारी ॥ बन्ना बीड़ी मांगै न्यारी० ॥ ३ ॥ इलायची कस्तूरी धूरी, अगर तगर कर्पूर कचूरी । शीतलचीनी लवंगधारी ॥ बन्ना बीड़ी मांगै न्यारी० ॥ ४ ॥ जातीफल गुंजा की पाती, सत पोदिना तमाल सुहाती । केशर जावित्री पुट डारी ॥ बन्ना बीड़ी मांगै न्यारी० ॥ ५ ॥ सोने चांदी वर्क लसेती, मूंगा मोती भस्म बसेती । बनरा नन्दललन रसियारी ॥ बन्ना बीड़ी मांगै न्यारी० ॥ ६ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बनरामंगल ॥ ७३ ॥

दादरा ॥

बनरा मेरा गुलाब केरा फुलवा ॥ (अन्तरा) नाजुक कलैयाँ लिये फूलोंकी छड़ियां। नैनों कजर अनमुलवा ॥ बन्ना मेरा० ॥ १ ॥ हाथों में मेंहदी जड़ीली अँगूठी। सोहै कँगनवा खड़ुलवा ॥ बन्ना मेरा० ॥ २ ॥ शिर पै चीरा बहारदार कलँगी। माथे तिलक नीक ढुलवा ॥ बन्ना मेरा० ॥ ३ ॥ नौलखिया हरवा हीरौंदा सेहरा। मुतियों दाहार मभ्फुलवा ॥ बन्ना मेरा० ॥ ४ ॥ नँद का ललन बन्ना बांकाविहारी। मांगै वो नाजों का डुलवा ॥ बन्ना मेरा० ॥ ५ ॥

बनरामंगल ॥ ७४ ॥

दादरा जोड़ेका ॥

बनरा मेरा शिकारी जोबन का ॥ (अन्तरा) रसिया रुचीला रँगीलासा बांका। प्रेमी वो प्रिया चितवन का ॥ १ ॥ प्रेमका प्याला पिलावे मुहावे जी। कजरा काढ़े दृगन का ॥ २ ॥ नागर उजागर सो प्रीती का सागर। लोभी वो मीठे वचनका ॥ ३ ॥ आली अलबेला सुहेला नवेला। रँग ढँग नन्दललनका ॥ ४ ॥

बनरीमंगल ॥ ७५ ॥

दादरा जोड़ेका ॥

बनरी मेरी चमेली की कलियां ॥ (अन्तरा) अँखियां आमों की फँकियां रसीली। कजराकी रेख प्रबलियां ॥ १ ॥ अलकैं कारी घूंघरवारी प्यारी। मनु मधुकरगण आलियां ॥ २ ॥ चन्दासा मुखड़ा सितारासी बिंदिया। नागिनिसी भौं चुलबुलियां ॥ ३ ॥ गाल गुलाबी गुलाबों से गालिब। हीरों की ऐसी दँतुलियां ॥ ४ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हसन मोहनियां बसीकरनियां । अम्मृत ऐसी बतुलियां ॥ ५ ॥ नाजुक कमलसी कलैयां सलोनी सो । चंपाकली सी अँगुलियां ॥ ६ ॥ जुबनों का जौंहर है जुबना पै जाहिर । गेंदा गुलाब कली फलियां ॥ ७ ॥ चीतेसी पतली कमर करधनियां । हंसा सी चाल छलबलियां ॥ ८ ॥ मखमल औ माखन से चीकनपनो गात । गोरी गुराई असालियां ॥ ६ ॥ नँद के ललन ऐसे बन्नेकी बनरी पै । वारी सुरों की नवलियां ॥ १० ॥

बनरीमंगल ॥ ७६ ॥

दादश जोड़ेका ॥

नाजो अलबेली नबेली चिकनियां ॥ (अन्तरा) पोत्रों की सुखिया सदा सुख की मुखिया । धनियां वो नाजुक बदनियां ॥ १ ॥ रँगरस की रसिया वो हँसमुख विलासिया । बतसियासी मीठी बचनियां ॥ २ ॥ चन्दा से गोरी भोरी रूप बोरी । नाजुक करहैयां कमनियां ॥ ३ ॥ दामिनसी दमकै सुरँग सुवरणसी । पहिरे सो पीत झुग्गनियां ॥ ४ ॥ नैना नुकीले रँगीले रसीले से । चितचोरन चितवनियां ॥ ५ ॥ यशुदा ललन बन्नेकी बनरी प्यारी । भीष्मक नृपति की ललनियां ॥ ६ ॥

बनरीबनरामंगल ॥ ७७ ॥

दादश जोड़ेका ॥

बांकी दुल्हैया दुल्हैया का बनरा ॥ (अन्तरा) गोरी गोरी बनरी का बनरा सलोना । मन मुहना गुण अगरा ॥ १ ॥ नाजो नबेली अलबेली सुहेली । सुहेला बनेका तनसगरा ॥ २ ॥ चन्दा जुन्हैया सुरजकी किरनियां । दंपतिका रूप उजगरा ॥ ३ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

द्योकीललन भीष्मक की ललनियां। दोनों का यश जग बगरा ॥ ४ ॥

सेहरामंगल ॥ ७८ ॥

दादरा जोड़ेका ॥

सेहरा मालिन सुघरसा बनैये ॥ (अन्तरा) हीरा मोती मणियों की लड़ियों के बिच बिच, पन्ना फिरोजा पुहैये ॥ १ ॥ चुन्नी निलमणियां लहसुनियां पुखराजोंकें, झुम्कीले झुम्पे लगैये ॥ २ ॥ बेला चमेली निवारी के फुलवन, गुहि गुहि गुंछा गुँथैये ॥ ३ ॥ सोने के तारों के सल्मा सितारों के, जाल् बेल् बूंटा रचैये ॥ ४ ॥ मेरे ललन शिर बँधैये तमीमोंसे, मन्मानो नेग चुकैये ॥ ५ ॥

सुहागमंगल ॥ ७९ ॥

हरे हरे गोबर लिपाउ मोरे बाबुल, अतरन अँगन सिंचाउ रे। हरियरे बसवा कदलि बिटप हरे, रतनन मँडपा मँढ़ाउ रे ॥ (अन्तरा) हरे हरे पनवा फिरुजवा के फुलवा, बेल बूटा जाल छुड़ाउ रे। हीरालाल मोती मणि माणिक रतन केरे, झालरी झुम्पा झमकाउ रे ॥ १ ॥ हरे हरे रंग मँगाउ मोरे बाबुल, हरो हरो मँदिर पुताउ रे। हरे हरे काँचके झाड़ झबा हांड़ी, फँनुस गिलास टँगाउ रे ॥ २ ॥ हरे हरे अमवाके पतवाकी पावन, बन्दनवार बँधाउ रे। चित्र विचित्र मुकर चित्रन सों, मँडपा मँदिर सजवाउ रे ॥ ३ ॥ हरो हरो चाकल चारु चँदोवा, तासन अजिर छवाउ रे। हरे हरे नगन की नइ नइ जड़ना, चँदवा में चित्र खिंचाउ रे ॥ ४ ॥ हरे हरे सुअना सो हरित हरेवा, हुरिल हजारदास्ताउ रे। पंछिनु परिकर पुंज प्रेम वच, यंत्रन धुनि छिड़वाउ रे ॥ ५ ॥ हरे हरे पूंगीफल हरे नरियल, हरी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हरी चूनर रँगाउ रे। हरी हरी चुरियां रतन धन पटहरे, हरी हित तिलक पठाउ रे ॥ ६ ॥ हरे हरे झुमत निशान वाद्य बहु, सामा सजैत सजाउ रे। किंकर यान बिमान अमित नृप, बेटी को चढ़यो चढ़ाउ रे ॥ ७ ॥ बाजाहिं भेरि नगार नौबतें, नन्दजूके मन बड़ चाउ रे। चढ़ो तिलक सहधूम नृपति गृह, नातिन गोतिन जुटाउ रे ॥ ८ ॥ हरे हरे बागन बरात बसत आई, आई कुँवर केरे साउ रे। हरे हरे अमवा की छैंयन टिकई, कियो आदर सत-भाउ रे ॥ ९ ॥ हीरामहल में समधिया उतारे, मोतीमहल धीको नाहु रे। घोड़ा उतारे घुड़सार हाथिन को, बागन बीच ज-माउ रे ॥ १० ॥ हरी हरी दूर्बा दै समुखे घुड़ौना, दाना मसाले सँदाउ रे। समुखे मलीदा दै हथिया हजारन, ऊंट वृषन न गि-नाउ रे ॥ ११ ॥ दैजादे समुखे समधिया बराती, धी दै दमादै राउ रे। नेगी पझारुन अस धन दीन्हे, दूजे को होय न ह्याउ रे ॥ १२ ॥ दानदहेज में वसन आभरन, दीन्हे सो जड़ि-या जड़ाउ रे। बीरन दइ चटकीली चुनरिया, भाभी हँसै सा अनखाउ रे ॥ १३ ॥ तीर परोसी सखियां सहेली, दीन्ही नेग निछाउ रे। ब्याही भीष्मक बेटी नन्दनँदनसँग, वेद सविधि बरताउ रे ॥ १४ ॥ धी बिछुरत मैया रोवन लागी, बबुलै आयो पछिताउ रे। बिरना के रोये फाटे छतियां सबनकी, भाभी न हिय उमँगाउ रे ॥ १५ ॥ बाबुल कहै षट मास बीरन कहै, काज परोजन बहिना आउ रे। मैया कहे बेटी दूल्हो बसाऊँ घर, भाभी कहे न निभाउ रे ॥ १६ ॥ हमें तो दैदइ बाबुल हाथ पराये, न घर ऐबेको दाउ रे। नित घर बसहुँ न धीर तू धर भाभी, काहे को करत चवाउ रे ॥ १७ ॥ मैया बाप केरी हूं मैं तो जाई, भैया सों न

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नांत नताउ रे। आऊं भतीजे भये काज टेहुले, मैया जो मोहिं बुलाउ रे॥ १८॥ बाबुल पठाई परदेशा में भाभी भयो, घर से चूगा चुकाउ रे। वनकी चिरैयां चूंगा चुग विन उड़जाय, सोइ गति मोर लखाउ रे॥ १९॥ सुधि मत मोर भुलैयो बाबुल भाभी, बीरन येही चिताउ रे। कब बिछुड़े पंछी आन मिलावे, विधिना के हाथ मिलाउ रे॥ २०॥ मैया बाप भाभी बीरन छूटै, गुड़ियन खेल खिलाउ रे। गुड़ियां खिलंती छूटै सगी सहेली मोरा, मैके से होत छुड़ाउ रे॥ २१॥ दृगभर असुअन नदी बहावत, बिरह उमँग दरियाउ रे। धी पठाय घर आये सबन उर, रुक्मिनि बिछुरन घाउ रे॥ २२॥ मैया बाबुल कहँ भैया विकल लखि, देत विविध समझाउ रे। क्यों उदास मन होवत बाबुल, जग येही चलन चलाउ रे॥ २३॥ पर घर केरो धन धी मोरे बाबुल, अपने मनै में करु न्याउ रे। कोइ अपनी लेजावे क्यहुकी लावे हम धी, जिय कछु सोच न लाउ रे॥ २४॥ फूलै फलै लाड़ो लाड़ो का बनरा, विधिना से यही मनाउ रे। भाग सुहागवती हो मोरी बहिना, ससुरे में रहै बनाउ रे॥ २५॥ नन्दललन ब्याह आये अपन घर, त्रिपुर अनन्द ठनाउ रे। सुर नर मुनि बनी बन्ना अशीशें, हित चित सहित उछाउ रे॥ २६॥

रुक्मिणीमंगल॥ ८०॥

फूली फूली है अजब बहार, गुलाब गेंदा बेला की कली। बोलै कोकिल पपैहा हरीदार, बजाओ गाओ मंगल अली॥ (अन्तरा) राजा भीष्मक के भये सुत पांच, अकेली सुता रुक्मिनी। मैया बबुला ने कीन्हों विचार, विवाहों कासों अपनी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लली ॥ १ ॥ जेठो भैया कहै शिशुपाल, बाबुल कहे श्याम सँगं।
कहें तीर परोसी यादोराय, दियेते होवै कीरति भली ॥ २ ॥ बेटी
बिरना विचार, निहार, गुपालजीको ध्यावती। बूढ़ो ब्राह्मण
आयो वहिबार, अचानक वाहि गली ॥ ३ ॥ कियो कागजवा अ-
चरा को फाड़, स्याही कीन्ही कजराकी। नख केर लेखनियां से
लिखी, पतिया में विनय अबली ॥ ४ ॥ थोड़ी थोड़ी लिखूं पिय
विनय, बहुतकर जानिये। लखि दासी दुखित ब्रजराज, सहाय
हूजै बेगि बली ॥ ५ ॥ द्विज दइ पतिया प्रभु बांचत, छतियां उठि
धड़क। खाय वन की घुंघुचियां न गरभ, नशायो काहे तुहि
सृजली॥ ६ ॥ आई दमसुत केर बरात, नगर खलबल पड़ो। बेटी
व्याकुल ह्वैकर गिरी, खाय के पछाड़ थली ॥ ७॥ भैया बराजोरी
कर लै तैल, चढ़ायो तन बहिन के। सिख सखियां देवन लागि,
निरख लाड़ो दलमली ॥ ८ ॥ विधि विरची जो कुबिजा लिलार, तौ
चातुर करा मिलै। खोंटी अपने करम की जो रेख, सो कैसे के
टालें टली ॥ ९ ॥ आई वहि छिन कृष्ण बरात, जीत बैरिन-
लियो। ब्याही राजकुँवर यादोराय, त्रिपुर भइ झला झली ॥ १० ॥
धनि धनि लाड़ो तेरो भाग, सुहागिल सुख भरी। नँदललन
सो प्रिय पियपाय, सुफल कियो तपप्रबली ॥ ११ ॥ सब देहिं
अशीश तुम्हार, सहेली तुहि प्रिया। हो ललनवन्त रहे अमर,
तोर कीरति अचली ॥ १२ ॥

बनरामंगलशिशुपालबड़ाई ॥ ८१ ॥

रागिनी बरुआ में दादरा ॥

बना कैसा कैसा बन्ना मज़ेदार, देखा सुना न जैसा तैसा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लीजै नैन निहार ॥ (अन्तरा) मुख लंगूरी पै क्या नूरी आब-नुसी बहार। अँग अँग पै लालमा कालमा मुखपै तरेहदार तरे-हदार तरेहदार ॥ कैसा कैसा बन्ना मज़ेदार ॥ १ ॥ प्रभा ललन रुकमी बड़भागी तोसों नात सचार। हमहुँ सबन कर्मन गति जागी मुरति विलोकि तुम्हार बलिहार बलिहार ॥ कैसा कैसा बन्ना मज़ेदार ॥ २ ॥

बनरामंगल ॥ ८२ ॥

शिशुपाल बड़ाई रा॰ ज़ि॰ विहाग में दादरा ॥

दमघोष तेरे बन्नेपै वारी रे। जिसकी सूरत सबी जगसे न्यारी रे॥ (अन्तरा) गौर अंग मुख श्यामता ऐसी लजत कोयलिया कारी रे ॥ जिस्की सूरत सबी जगसे न्यारी रे ॥ १ ॥ लोखरि स्यार न कर संकें सरबर कागन गति मतिहारी रे ॥ जिस्की सूरत सबी जगसे न्यारी रे ॥ २ ॥ आब उदास आबनुस केरी कजर कालमा धारी रे ॥ जिस्की सूरत सबी जगसे न्यारी रे ॥ ३ ॥ अलि अहि नारी किधौं अँधियारी कहुँ तुहि क्यहि अनुहारी रे ॥ जिस्की सूरत सबी जगसे न्यारी रे ॥ ४ ॥ ऐस ललन बड़ तप कर पैयतु नृप बड़ करनी भारी रे ॥ जिस्की सूरत सबी जगसे न्यारी रे ॥ ५ ॥

बनरामंगल ॥ ८३ ॥

शिशुपाल प्रसंशा रा॰ गौरी में दादरा ॥

बनरा आया विवाहन नीका ॥ (अन्तरा) तन उजियारा मुँह जिस्का कारा मनु जाया हब्शीका ॥ १ ॥ विधि प्रतिकूला भया अनुकूला दिया मुख अजब छबीका ॥ २ ॥ धनि उन भाग ऐस सुत पाया बड़ तप पितु जननीका ॥ ३ ॥ दिपत वदन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लंगूरी शोभा त्रासी वन कजरीका ॥ ४ ॥ कागों की साया स्यारों नताया अंश किधौं लोखरीका ॥ ५ ॥ धनि दमु ललन सुहृद शिशुपाला जन्मा तू कौन घड़ीका ॥ ६ ॥

मज़ा देते हैं क्या यार तेरे बाल घूँघरवाले इस धुनि पर ॥

बनरामंगल ॥ ८४ ॥

धनि धनि धनि बनरे शिशुपाल तेरी छबि न्यारीपर बलिहारी ॥ (अन्तरा) श्यामता तेरे मुख जैसी, न कजरा में कारिख तैसी ॥ न देखी सुनी सुरत ऐसी, निरखि होरही दंग नारी ॥१॥ जचै तुव मात छिनरिया घोर, लिया कोइ हब्शी से हित जोर ॥ उसी का अंश दिपै मुख तोर, नगर नृप तोरे वारी वारी ॥ २ ॥ नहीं तैं निज कुल की अनुहार, न सरवर भीष्मक प्रिय परिवार ॥ नृप ललन कहैं तो कौन प्रकार, हमे यहि सोच पोच भारी ॥३॥

बनरामंगल ॥ ८५ ॥

रागिनी काफी ॥

चिरजीवै बनरा तुम्हारा दुलारा प्रान प्यारा रे ॥ (अन्तरा) लोमषसी आयू अदरावे जग सुख भोग विहारा, अपारा हो सवेंदा सुखवारा ॥ १ ॥ प्रिय बनरी बनरे की दुल्हैया फूलन फलै प्रतिवारा, प्रसारा होवै परिवारा सुखारा ॥ २ ॥ चन्द्रबना बनी चन्द्रजुन्हैया दोउ कुलको उजियारा, ललन नँदवारा द्रवै विष्णु दारा ॥ ३ ॥

इति श्रीद्विजवर्यपंडितललनापियाशर्मासारस्वतविरचिता ललनोद्वाहपद्यावली पूर्वार्द्धसमाप्ता ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor